आँचल

17वाँ अंक (जनवरी – जून 20[illegible])

आँचल

विभागीय गृह-पत्रिका

अंक - 17

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री पी. वी. हरि कृष्णा

प्रधान निदेशक

दिग्दर्शन

सुश्री अनिता सिंह

निदेशक (प्रतिवेदन)

प्रबंध संपादक

श्री ज्योतिमय बाइलुंग

उप निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री पियुष रामटेके, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अमित कुमार सिन्हा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर) - "आँचल" पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कवितायें तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

प्राक्कथन

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्धवार्षिक गृह-पत्रिका **"आँचल"** का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है। मुझे इस बात का संतोष है कि कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में लेखन की प्रेरणा देती हुई यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार में अपना योगदान दे रही है।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित कार्यालयों से पत्रिका के पिछले अंकों के संबंध में बहुत ही उत्साहजनक और प्रशंसात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं जो इस पत्रिका की उत्तरोत्तर बढ़ती स्वीकार्यता को दर्शाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका इसी तरह राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण योगदान करती रहेगी।

मैं संपादक मण्डल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। मैं हृदय से कामना करता हूँ कि **"आँचल"** इसी सहजता एवं सरलता से हिंदी का प्रचार-प्रसार करती रहे एवं निरन्तर प्रगति करती रहे।

पी. वी. हरि कृष्णा

प्रधान निदेशक

दिग्दर्शन

इस कार्यालय की विभागीय हिंदी गृह-पत्रिका **"आँचल"** का 17वाँ अंक पाठकों के बीच देखकर सुखद अनुभूति हो रही है। लगातार काम के दवाबों के बीच यह पत्रिका हमारे कार्मिकों को रचनात्मक लेखन के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करती है। इससे कार्मिकों के बीच विचारों का लगातार परिशोधन और परिमार्जन होता है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी बहुमूल्य रचनाएँ प्रदान करने वाले सभी कर्मचारी एवं अधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उनके मनोबल को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित।

अनिता सिंह

निदेशक (प्रतिवेदन)

संदेश

विभागीय गृह-पत्रिकाओं की अवधारणा कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना और एक सार्थक माध्यम प्रदान करना है। इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही विभागीय गृह-पत्रिका **"आँचल"** लगातार अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होती रही है और मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में आगे भी सफल रहेगी। कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका-प्रकाशन हेतु रचनायें प्रस्तुत करने में जो उत्साह दर्शाया गया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। रचनाधर्मिता के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रगति सुनिश्चित करना ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी कार्यालय के सभी कर्मचारी पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं अपने कार्य से भी संबंधित लेख आदि लिखकर पत्रिका को उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का प्रयास करेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

ज्योतिमय बाइलुंग

उप निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	श्री पी. वी. हरि कृष्णा	2
2.	दिग्दर्शन	सुश्री अनिता सिंह	3
3.	संदेश	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	4
4.	अनुक्रमणिका		5
5.	संपादकीय	श्री जय राम सिंह	6
6.	भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि श्रृंखला	हिंदी प्रकोष्ठ	8-12
7.	जो लौट के घर न आए	हिंदी प्रकोष्ठ	13-17

पद्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	नारी	श्री जय राम सिंह	18
2.	एक सफर	श्री दीपेन्द्र कुमार राज	19
3.	बेटी	श्री सुरेश कुमार	20
4.	कुछ रह तो नहीं गया	श्रीमती रितु मोटवानी	21
5.	श्रद्धांजलि	श्रीमती रितु मोटवानी	22
6.	Life is Beautiful	श्री रॉबर्ट सिम्टे	23
7.	Caught in the Memories	श्री रॉबर्ट सिम्टे	24

गद्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूकता	श्री तुषार शंकर बने	25
2.	अपेक्षा	श्री तरुण बजाज	26
3.	फायदे के लिए कुछ भी सही	श्री तरुण बजाज	27
4.	महिला सशक्तिकरण	श्रीमती नयना केळसकर	28 - 29
5.	क्रोध का उपचार	श्री प्रवीण नाफाडे	30
6.	सास से छुटकारा	श्री सुरेश कुमार	31 - 32
7.	तुम्हारे बारे में	श्री जिज्ञासु पंत	33 - 34
8.	इच्छा से लालच, लालच से विनाश	श्री अंकित आज़ाद	35 - 36
9.	रूस – यूक्रेन संकट : कौन सही कौन ग़लत	श्री अजीत कुमार	37 - 38

अन्य

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 संबंधी विशिष्ट प्रावधान	हिंदी प्रकोष्ठ	39 - 44
2.	आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ	कार्यालयों / पाठकों से	45 - 48
3.	चित्र बोलते हैं	हिंदी प्रकोष्ठ	49 - 51
4.	राजभाषा हिंदी की प्रगति की समीक्षा	हिंदी प्रकोष्ठ	52 - 53
5.	विविधा	हिंदी प्रकोष्ठ	54

राजभाषा हिंदी का महत्व

जय राम सिंह
क. अनुवादक

हिंदी भारत की राजभाषा है। विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूची में हिंदी को अग्रिम स्थान मिला हुआ है। हिंदी हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। हिंदी भाषा हमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करवाती है। विश्व की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा में हिंदी का स्थान तीसरा है।

भारत देश में यह भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितम्बर 1949 के दिन अधिकारिक रूप से राजभाषा की मान्यता दी गई। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में जहाँ भाँति-भाँति की भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में हैं, लोगों में आपसी संवाद को सुचारु और सरल बनाने में हिंदी की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हिंदी भाषा का जन्म लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था। ऐसा माना जाता है कि हिंदी का जन्म देवभाषा संस्कृत से हुआ है। संस्कृत से पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट और खड़ी बोली के पड़ावों से होती हुई हिंदी का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है जो सर्वग्राह्य, सर्वप्रिय और सर्वोपयोगी है और इस नाते हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है। हिंदी एक भावात्मक भाषा है, जो लोगों के दिलों को आसानी छू लेती है।

पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी भाषा को जाता है। हिंदी भाषा जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिंदी द्वारा निभाई गई भूमिका अविस्मरणीय है। हिंदी गीतों, कविताओं और साहित्य ने स्वतंत्रता सेनानियों में राष्ट्रभक्ति, जोश और बलिदान की भावना भरने में चमत्कारिक भूमिका निभाई थी। यहाँ तक की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की भारत की विकास-यात्रा को काफी हद तक हिंदी ने प्रेरित किया है। 1965 के युद्ध के समय हमारे प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए नारे "**जय जवान जय किसान**" को कौन भूल सकता है ? हिंदी भाषा में ही यह सामर्थ्य है कि चार शब्दों के इस नारे ने एक मजबूत स्वावलम्बी भारत को इतनी आसानी से पूर्णतः परिभाषित कर दिया।

हिंदी सिर्फ भारत में ही नहीं, दुनिया के कई हिस्सों में लोकप्रियता के नए सोपान चढ़ रही है। हिंदी फिल्मों के दर्शकों की संख्या दुनिया में लगातार बढ़ती जा रही है। यही हाल हिंदी गीत-संगीत और साहित्य का भी है। हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी भविष्य की भाषा है। एक भारतीय होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हमें भी हिंदी के महत्व को स्वीकार कर इसे बढ़ावा देना चाहिए।

इंटरनेट एक ऐसी जगह है, जहां पर हम हर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इंटरनेट जिस रफ़्तार से विकसित हुआ है, वो वास्तव में प्रशंसायोग्य है। हिंदी भाषा भी अब इंटरनेट पर तेजी से

अपने प्रभावक्षेत्र को फैला रही है। आज के समय में हिंदी भाषा हर समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है। गूगल और विकिपीडिया जैसे बड़े वेबसाइट हिंदी को हर व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं। इन्होंने हिंदी भाषा के महत्व को समझते हुए इंटरनेट पर ट्रांसलेटर, सर्च इंजन, सॉफ्टवेयर आदि को विकसित किया है जिससे लोगों के लिए हिंदी को जानना, पढ़ना, समझना और लिखना काफी आसान हो गया है। आज के समय में इंटरनेट पर हर महत्वपूर्ण चीज की जानकारी हिंदी में मिल रही है, जिससे हिंदी और भी लोकप्रिय होती जा रही है। हर कोने में हिंदी की पहचान कायम हो रही है।

हिंदी भाषा की कुछ ऐसी विलक्षण विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य सभी भाषाओं से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैः-

1. हिंदी संभवतः ऐसी इकलौती भाषा है जो जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढ़ी भी जाती है। इस प्रकार इसमें अशुद्धि की गुंजाइश बहुत कम हो जाती है।
2. हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है जो अत्यन्त सुगम और वैज्ञानिक लिपि है।
3. हिंदी में दूसरी भाषाओं के शब्दों को जैसे का तैसा अपनाने की प्रबल क्षमता है जो बहुत सी अन्य भाषाओं में दुर्लभ है।
4. इस भाषा के वर्णमाला में स्वर और व्यंजन दूसरी भाषाओं की वर्णमालाओं की तुलना में बहुत अधिक व्यवस्थित हैं।
5. यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें निर्जीव वस्तुओं के लिए भी लिंग और वचन का निर्धारण होता है।
6. इस भाषा में अध्वनित अक्षर (साइलेंट लेटर्स) नहीं होते हैं, जिसके कारण ही इसका उच्चारण और लेखन में शुद्धता और स्पष्टता होती है।

हिंदी के इन्हीं उदात्त गुणों के कारण इंटरनेट और सोशल मीडिया पर इसका प्रयोग हमेशा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। हिंदी भाषा के प्रति हमारा सभी का यह कर्तव्य है कि हम हिंदी के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करें और इसका भरपूर सम्मान करें। यह भाषा सबको जोड़ने का काम करती है, तोड़ने का नहीं। हम सबों को यह समझना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग करना हीनता का प्रतीक नहीं बल्कि यह हमारा गौरव है।

हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता - महात्मा गाँधी

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल का यह नियमित स्तम्भ है। इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे '**आज**' को सुखमय बनाने के लिए अपने '**आज**' की आहुति दे दी थी। इस अंक से हम स्वतंत्रता के वैसे नायकों की गाथाएँ सामने ला रहे हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती या बिन्कुल ही नहीं होती है। प्रस्तुत अंक में देश की कुछ वीरांगनाओं की गाथाओं को इकट्ठा कर उन्हें आप सुधी पाठकों तक पहुँचाने का हमारा प्रयास है – सम्पादक)

1. मातंगिनी हाज़रा

एक ऐसी महिला जिसे जीवन के प्रथम 62 साल तक यह भी नहीं पता था कि स्वतंत्रता आंदोलन है क्या? उसकी अपने गांव और घर से बाहर की जिंदगी बड़ी सीमित थी। लेकिन आज उन्हें '**बूढ़ी गाँधी**' के नाम से जाना जाता है। उनका नाम **मातंगिनी हाजरा** था। मातंगिनी बंगाल के एक गरीब किसान की बेटी थी। इनके बचपन में ही पिता ने एक साठ साल के वृद्ध से इनका विवाह कर दिया। जब मातंगिनी 18 साल की हुईं तो पति की मौत हो गई। सौतेले बच्चों ने घर से निकाल दिया। जीवन जीने का कोई अन्य चारा नहीं था तो वे पश्चिम बंगाल के मिदनापुर के तामलुक में ही एक झोंपड़ी बनाकर रहने लगीं। ऐसे ही अकेले रहते-रहते उनके 44 साल और बीत गए।

लोगों के घरों में मेहनत-मजदूरी करतीं और उसी से अपना घर चलातीं। अकेली थीं तो धीरे धीरे लोगों से अपने देश की हालत और गुलामी के बारे में जानने लगीं। घर से बाहर निकलीं तो अँग्रेजी हुकूमत का अत्याचार दिखा। धीरे-धीरे वे लोगों से गाँधीजी के बारे में भी जानने लगीं। एक दिन 1932 में उनकी झोंपड़ी के बाहर से सविनय अवज्ञा आंदोलन की एक विरोध यात्रा निकली। 62 साल की हाजरा को जाने क्या सूझा, वो भी उस यात्रा में शामिल हो गईं। उन्होंने नमक विरोधी कानून को नमक बनाकर तोड़ा, गिरफ्तार हुई और सजा भी मिली। उनको कई किलोमीटर तक नंगे पैर चलने की सजा दी गई। उसके बाद उन्होंने '**चौकीदारी-कर रोको**' प्रदर्शन में हिस्सा लिया। काला झंडा लेकर सबसे आगे चलने लगीं। इस जुर्म में उन्हें 6 महीने की जेल हुई। जेल से बाहर आकर उन्होंने एक चरखा ले लिया और खादी पहनने लगीं। लोग उन्हें '**बूढ़ी गाँधी**' के नाम से पुकारने लगे। 1942 में गांधीजी ने '**भारत छोड़ो आंदोलन**' का ऐलान कर दिया और नारा दिया '**करो या मरो**'। मातंगिनी हाजरा ने मान लिया था कि अब आजादी का वक्त करीब आ गया है। उन्होंने तामलुक में '**भारत छोड़ो आंदोलन**' की कमान संभाल ली, जबकि उनकी उम्र 72 पार कर चुकी थी। तय किया गया कि मिदनापुर के सभी सरकारी ऑफिसों और थानों पर तिरंगा फहरा कर अँग्रेजी राज खत्म कर दिया जाए। 29 सितम्बर 1942 का दिन था। कुल 6000 लोगों का जुलूस था जिसमें ज्यादातर महिलाएं थीं। वह जुलूस तामलुक थाने की तरफ बढ़ने लगा। पुलिस ने चेतावनी दी तो लोग पीछे

हटने लगे। मातंगिनी बीच से निकलीं और सबके आगे आ गईं। उनके दाएं हाथ में तिरंगा था और कहा - 'मैं फहराऊंगी तिरंगा, आज कोई मुझे कोई नहीं रोक सकता'। वंदे मातरम् के उदघोष के साथ वे आगे बढ़ीं। पुलिस की चेतावनी पर भी जब वे नहीं रुकीं तो एक गोली उनके दाएं हाथ पर मारी गई। वे घायल तो हुईं, लेकिन तिरंगे को नहीं गिरने दिया। घायल-कराहती मातिंगिनी ने तिरंगा दूसरे हाथ में ले लिया और फिर आगे बढ़ने लगीं। देशभक्ति का जुनून 72 साल की मातंगिनी हाजरा पर इस कदर हावी था कि पहली गोली लगते ही बोला '**वन्दे मातरम्**'। पुलिस ने फिर दूसरे हाथ पर भी गोली मारी। वे फिर बोलीं '**वन्दे मातरम्**'। लेकिन किसी तरह झंडे को सम्भाले रखा, गिरने नहीं दिया। '**वन्दे मातरम्**' बोलती रहीं, झंडा ऊंचा किए रहीं और थाने की तरफ बढ़ती रहीं। तब एक पुलिस ऑफिसर ने तीसरी गोली चलाई, सीधे उस वीरांगना के माथे पर... बीचों-बीच। वे नीचे तो गिरी लेकिन झंडा जमीन पर नहीं गिरने दिया, अपने सीने पर रखा और जोर से फिर बोला – **वन्दे ... मातरम्, भारत माता की जय**।

उनकी मौत के बाद लोग काफी आक्रोशित हो गए। उनका सम्मान उस इलाके में उस वक्त गाँधीजी से किसी मायने में कम नहीं था। सबने सोचा कि जब एक बूढ़ी महिला इतनी हिम्मत देश के लिए दिखा सकती है तो हम क्यों नहीं ? लोगों ने सभी सरकारी दफ्तरों पर कब्जा कर लिया और वहाँ अपनी खुद की सरकार घोषित कर दी। वहाँ के लोगों ने पाँच साल पहले ही अपने इलाके को अँग्रेजों से आजाद घोषित कर दिया और दो साल बाद गाँधीजी की अपील पर ही सरकारी दफ्तरों से अपना कब्जा छोड़ा। गाँधीजी भी उस महिला का अदम्य साहस सुनकर हैरान थे। वे इस बात से खुश भी थे कि बदन पर गोलियाँ खाते रहने के बावजूद मातंगिनी ने लोगों को हिंसा के लिए भड़काने की कोशिश कतई नहीं की, उनके अहिंसा के सिद्धांत को डिगने नहीं दिया। (**आँचल परिवार बूढ़ी गाँधी मातंगिनी हाजरा जी को शत्-शत् नमन करता है**।)

2. तारा रानी श्रीवास्तव

बचपन से ही तारा के मन में देशप्रेम की भावना जाग्रत होने लगी थी। बिहार की राजधानी पटना में जन्मीं तारा की शादी कम उम्र में ही एक स्वतंत्रता सेनानी फुलेंदू बाबू से कर दी गई थी। ऐसे में तारा के मन में देश-प्रेम और बढ़ गया। जिस समय में औरतें चहारदीवारी और घूँघट से भी बाहर नहीं आ पाती थीं, उस समय तारा, पति फुलेंदू के साथ देश की आजादी की लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर चल रही थीं। वह अलग-अलग गांवों में जाकर अन्य औरतों को भी आजादी की लड़ाई का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया करती थीं।

बिहार के तत्कालीन सारण और वर्तमान सिवान जिले का बंगरा इकलौता ऐसा गाँव है, जहां से 27 लोग स्वतंत्रता सेनानी हुए। इसी गाँव के फुलेंदू (गाँव के लोग उन्हें फुलेना बाबू कहते थे) और उनकी धर्मपत्नी तारा भी महात्मा गाँधी के साथ जुड़े थे। 8 अगस्त 1942 को हुए गाँधी जी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' का आग़ाज किया गया। इसी दौरान फुलेंदू सिवान थाने की ओर तिरंगा लहराने के लिए चल पड़े। उनके साथ पूरा जनसैलाब था और खुद तारा रानी इसका नेतृत्व कर रही थीं। उस वक्त महाराजगंज थाने के दारोगा थे रहमत अली। थाने की तरफ आती

भीड़ को रोकने के लिए रहमत अली और थाने में तैनात सिपाहियों ने भीड़ के ऊपर बंदूकें तान दीं। पुलिस को एक्शन में देख क्रांतिकारियों के कदम ठहर गए। वहां अफरातफरी मच गई। स्वतंत्रता सेनानी मुंशी सिंह के अनुसार तब उनकी उम्र 12 वर्ष थी लेकिन आगे की पंक्ति में फुलेन्दू बाबू और तारा देवी के साथ वो भी खड़े थे। मुंशी सिंह के मुताबिक दारोगा रहमत अली ने फुलेन्दू बाबू को निशाने पर लेकर वापस लौट जाने का हुक्म दिया। वैसे तो फुलेना बाबू बंदूक से डरने वालों में नहीं थे। लेकिन उनसे पहले तारा देवी ने ही उन्हें आगे बढ़ने को कहा। जैसे ही फुलेन्दू बाबू आगे बढ़े पुलिस ने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। फुलेन्दू बाबू को 9 गोलियाँ लगी। वे वहीं गिर पड़े और बुरी तरह घायल हो गए। ऐसे में तारा रानी ने अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़कर उन्हें पट्टी बांधी और सभी स्त्रियों को प्रेरित करती हुईं आगे बढ़ गईं. क्योंकि अगर उस समय वह टूट जातीं, या रुक जाती तो सभी महिलाओं की हिम्मत भी जवाब दे देती। अब उन्होंने तिरंगा फहराने का संकल्प लिया जिसे उन्होंने पूरा भी किया। फुलेन्दू बाबू को गोली लगने के बाद जनता बेकाबू हो गई। पुलिस भीड़ पर गोलियां बरसा रही थी और इधर से ईंट-पत्थर चलाये जा रहे थे। तब थाने को जला देने का फैसला किया लिया गया। फुलेन्दू बाबू को गोली लगने के बाद भी तारा देवी विचलित नहीं हुईं। बल्कि साथियों के साथ आगे बढ़कर महाराजगंज थाने पर झंडा फहराया। उग्र भीड़ के आगे पुलिस की एक न चली। लेकिन जब तक वह वापस पति के पास लौटीं, उनकी मृत्यु हो चुकी थी। तब तारा देवी ने अपने पति के शव के साथ पूरी रात अकेले बिताई थी। उन्होंने कहा था कि आज ही हमारी शादी हुई है और आज ही हमारी सुहागरात है'। स्वतंत्रता सेनानी मुंशी सिंह के अनुसार रात 10 बजे के बाद तारा देवी ने दिव्य रूप धारण कर लिया। उन्होंने अपने बालों का जूड़ा खोल दिया और एक साड़ी में लिपट कर वह पूरी रात पति के पास अकेली बैठी रहीं। वहाँ जाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। अगले दिन फुलेन्दू बाबू का अंतिम संस्कार हुआ जिसमें तारा देवी भी शामिल हुईं, लेकिन उनकी आँखों से एक बूँद भी आँसू नहीं टपका।

16 अगस्त 1942 की घटना के बाद महाराजगंज अँग्रेजों के निशाने पर आ गया। घटना के करीब एक सप्ताह बाद बड़ी संख्या में गोरे सिपाही आए जो बर्बता की हदें पार करने लगे। स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों की गिरफ्तारी शुरू हो गई। जो स्वतंत्रता सेनानी नहीं पकड़े गए उनके घरों में आग लगा दी गई। इसी दौरान तारा देवी और उनके साथी मुंशी सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद भी उन्होंने 15 अगस्त, 1947 तक महात्मा गांधी के सभी आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आजादी के बाद भी तारा देवी राजनीति में सक्रिय रहीं। चुनाव भी लड़ा, लेकिन जीत न सकीं।

भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बीच महात्मा गाँधी सर्वमान्य थे। उनका सभी आदर करते थे। स्वतंत्रता सेनानी मुंशी सिंह ने पुरानी बातों को याद करते हुए बताया कि एक बार बनारसी दास चतुर्वेदी तारा देवी को लेकर महात्मा गाँधी से मिलने पहुँचे। कहा जाता है कि वहां तारा देवी से महात्मा गाँधी के पैर छूकर आशीर्वाद लेने को कहा गया। लेकिन तारा देवी ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी से अधिक योगदान उनका है। आजादी की लड़ाई में उन्होंने अपने पति का बलिदान दिया है। ऐसे में महात्मा गाँधी का पैर क्यों छुएँ। यह सुन कर वहां खड़े सारे लोग स्तब्ध रह गए। तारा देवी स्वभाव से ही क्रांतिकारी थीं। बहुत ही स्वाभिमानी वीरांगना थीं। किसी के सामने नहीं झुकती थीं। (**आँचल परिवार त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति श्रीमती तारा रानी श्रीवास्तव को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।**)

3. दुर्गा भाभी

दुर्गा भाभी का जन्म सात अक्टूबर 1907 को शहजादपुर ग्राम (अब कौशाम्बी जिला) में पंडित बांके बिहारी के यहां हुआ। इनके पिता इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में नाज़िर थे और इनके बाबा महेश प्रसाद भट्ट जालौन जिला में थानेदार के पद पर तैनात थे। इनके दादा पं० शिवशंकर शहजादपुर में जमींदार थे जो बचपन से ही दुर्गा भाभी की हर माँग को पूर्ण करते थे। दस वर्ष की अल्प आयु में ही इनका विवाह लाहौर के भगवती चरण वोहरा के साथ हो गया। इनके ससुर शिवचरण जी रेलवे में ऊंचे पद पर तैनात थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें राय साहब का खिताब दिया था। भगवती चरण बोहरा राय साहब का पुत्र होने के बावजूद अंग्रेजों की दासता से देश को मुक्त कराना चाहते थे। वे क्रांतिकारी संगठन के प्रचार सचिव थे। वर्ष 1920 में पिता जी की मृत्यु के पश्चात भगवती चरण वोहरा खुलकर क्रांति में आ गए जिसमें उनकी पत्नी दुर्गा भाभी ने भी पूर्ण रूप से सहयोग किया।

सन् 1923 में भगवती चरण वोहरा ने नेशनल कॉलेज से बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की और दुर्गा भाभी ने प्रभाकर की डिग्री हासिल की। दुर्गा भाभी का मायका व ससुराल दोनों पक्ष संपन्न था। ससुर शिवचरण जी ने दुर्गा भाभी को 40 हजार व पिता बांके बिहारी ने पांच हजार रुपये संकट के दिनों में काम आने के लिए दिए थे। लेकिन इस दंपति ने इन पैसों का उपयोग क्रांतिकारियों के साथ मिलकर देश को आजाद कराने में कर दिया। मार्च 1926 में भगवती चरण वोहरा व भगत सिंह ने संयुक्त रूप से नौजवान भारत सभा का प्रारूप तैयार किया और रामचंद्र कपूर के साथ मिलकर इसकी स्थापना की। सैकड़ों नौजवानों ने देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने की शपथ ली। भगत सिंह व भगवती चरण वोहरा सहित अन्य सदस्यों ने अपने रक्त से प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किए। 28 मई 1930 को रावी नदी के तट पर साथियों के साथ बम बनाने के बाद परीक्षण करते समय वोहरा जी शहीद हो गए। उनके शहीद होने के बावजूद दुर्गा भाभी साथी क्रांतिकारियों के साथ सक्रिय रहीं।

9 अक्टूबर 1930 को दुर्गा भाभी ने गवर्नर हैली पर गोली चला दी थी जिसमें गवर्नर हैली तो बच गया लेकिन सैनिक अधिकारी टेलर घायल हो गया। मुंबई के पुलिस कमिश्नर को भी दुर्गा भाभी ने गोली मारी थी जिसके परिणाम स्वरूप अँग्रेज पुलिस इनके पीछे पड़ गई। मुंबई के एक फ्लैट से दुर्गा भाभी व साथी यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। दुर्गा भाभी का काम साथी क्रांतिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल लाना व ले जाना था। चंद्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों से लड़ते वक्त जिस पिस्तौल से खुद को गोली मारी थी उसे दुर्गा भाभी ने ही लाकर उनको दी थी। उस समय भी दुर्गा भाभी उनके साथ ही थीं। उन्होंने पिस्तौल चलाने की ट्रेनिंग लाहौर व कानपुर में ली थी। 18 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह ने इन्ही दुर्गा भाभी के साथ वेश बदल कर कलकत्ता-मेल से यात्रा की थी। भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त जब केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने जाने लगे तो दुर्गा भाभी व सुशीला मोहन ने अपनी बांहें काट

कर अपने रक्त से दोनों लोगों को तिलक लगाकर विदा किया था। असेंबली में बम फेंकने के बाद इन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा फांसी दे दी गई।

साथी क्रांतिकारियों के शहीद हो जाने के बाद दुर्गा भाभी एकदम अकेली पड़ गई। वह अपने पांच वर्षीय पुत्र शचींद्र को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था करने के उद्देश्य से वह साहस कर दिल्ली चली गई। जहां पर पुलिस उन्हें बराबर परेशान करती रहीं। दुर्गा भाभी उसके बाद दिल्ली से लाहौर चली गई, जहां पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और तीन वर्ष तक नजरबंद रखा। फरारी, गिरफ्तारी व रिहाई का यह सिलसिला 1931 से 1935 तक चलता रहा। अंत में लाहौर से जिलाबदर किए जाने के बाद 1935 में गाजियाबाद में प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी करने लगी और कुछ समय बाद पुन: दिल्ली चली गई और कांग्रेस में काम करने लगीं। कांग्रेस का जीवन रास न आने के कारण उन्होंने 1937 में काँग्रेस को छोड़ दिया। 1939 में इन्होंने मद्रास जाकर मारिया मॉटेसरी से मॉटेसरी पद्धति का प्रशिक्षण लिया तथा 1940 में लखनऊ में कैंट रोड के (नज़ीराबाद) एक निजी मकान में सिर्फ पांच बच्चों के साथ मॉटेसरी विद्यालय खोला। आज भी यह विद्यालय लखनऊ में मॉटेसरी इंटर कॉलेज के नाम से जाना जाता है। 14 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद में भारत की इस वीरांगना ने इस दुनिया को अलविदा कर दिया। **(तेज, कर्मठता और बलिदान की जीवन्त प्रतिमा क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी को कृतज्ञ श्रद्धांजलि।)**

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है
जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका 'आँचल' इस अंक से यह नियमित स्तम्भ शुरु कर रही है। इस स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे। हमारा देश ओर जहाँ चीन, पाकिस्तान, आतंकवाद जैसी बाहरी चुनौतियों से लोहा ले रहा है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक और मानवजनित आपदाओं का भी सफलतापूर्वक मुकाबला कर रहा है। इस अंक से हम अपने उन रण-बाँकुरों की रण-गाथाएँ सामने ला रहे हैं जिन्होनें देश के प्रति अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखा और ज़रूरत पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे। अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान की रक्षा का प्रण लेकर गए , कर्तव्य-यज्ञ में ऐसे समर्पित हुए कि फिर कभी लौट के घर न आ सके। आशा है कि आप सुधी पाठकों को हमारा यह विनम्र प्रयास अच्छा लगेगा – सम्पादक)

1. सूबेदार श्रीजीत एम, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), सेना मेडल, 17वीं बटालियन, मद्रास रेजिमेण्ट

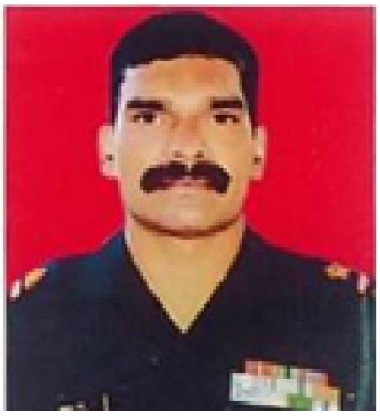

08 जुलाई 2021 को सुबह 0650 बजे, त्वरित प्रतिक्रिया दल के कम्पनी कमाण्डर सूबेदार श्रीजीत एम, सेना मेडल ने जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के सुन्दरबनी इलाके के घने और दुर्गम जंगलों में तलाशी अभियान चलाते समय दो या तीन आतंकवादियों की हलचलों को भाँप लिया। जेसीओ ने तत्काल अपनी टीम को डटने को कहा और आतंकवादियों पर फायरिंग करते हुए उन्हें उलझाए रखा ताकि वे भाग न जाएँ। भीषण गोलीबारी के बीच जेसीओ ने दो आतंकवादियों को सुरक्षा घेरा तोड़ने का प्रयास करते देखा।

अपने कुशल रणकौशल का परिचय देते हुए सूबेदार श्रीजीत रेंगकर किनारे तक पहुँचे और फायरिंग कर एक आतंकवादी को वहीं ढ़ेर कर दिया। इस पर दूसरे आतंकवादी ने अंडर बैरेल लॉचर और हैंड ग्रेनेड से हमला कर दिया जिसमें उन्हें को काफी चोटें लगीं और तेजी से खून बहने लगा। साथियों ने उन्हें वहाँ से सुरक्षित हटाने की कोशिश की लेकिन सूबेदार श्रीजीत नहीं माने और आतंकवादी को जीते-जी भागने नहीं दिया। उनकी बहादुरी, अद्भुत रणकौशल, नेतृत्व और बलिदान के लिए भारत सरकार ने 26 जनवरी 2022 को उन्हें मरणोपरान्त शौर्य चक्र से सम्मानित करने का फैसला किया है।

आँचल परिवार सूबेदार श्रीजीत एम, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), सेना मेडल की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

2. हवलदार अनिल कुमार तोमर, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), राजपूत रेजिमेंट/44 राष्ट्रीय राइफल्स

25 दिसंबर 2020 को, 2-3 अज्ञात आतंकवादियों की मौजूदगी के सुराग मिलने के आधार पर, कश्मीर के गांव में एक घेरा डालकर तलाशी अभियान शुरू किया गया था। हवलदार अनिल कुमार तोमर ऑपरेशन के लिए एक युद्धक कार्रवाई दल (कॉम्बैट एक्शन टीम) का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हें अभियान प्रमुख द्वारा घेरा को फिर से समायोजित करने का निर्देश दिया गया था। कार्य के लिए जाते समय, वह आतंकवादियों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए।

उनकी जाँघ में गोली लग गई। दुश्मन का सामना करने के लिए अत्यंत साहस का परिचय देते हुए उन्होंने सटीक गोलीबारी की और एक आतंकवादी को मार गिराया। फिर उन्होने दूसरे आतंकवादी का पीछा किया, उसे घायल कर दिया और उसे एक घर के अंदर घेर लिया। जब अभियान प्रमुख ने उत्खनन करके उस घर को नियंत्रित करने का फैसला किया, तो हवलदार अनिल कुमार तोमर ने घायल होने के बावजूद उत्खनन का मार्गदर्शन करने के लिए स्वेच्छा से काम किया। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा जा रहा था कि दूसरा घायल आतंकी अंधाधुंध फायरिंग करते हुए घर से बाहर निकल आया। हवलदार अनिल ने दूसरे आतंकवादी को मौके पर ही ढ़ेर कर दिया और इस कार्रवाई में स्वयं बेहोश हो गए। उन्हें उस स्थान से निकाल कर अस्पताल पहुँचाया जा रहा था। लेकिन चोटों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया और ड्यूटी के दौरान अपनी जान दे दी। दो आतंकवादियों को मार गिराने और देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने में गंभीर खतरे के बाबजूद उनकी बलिदानी भावना और असाधारण बहादुरी के लिए हवलदार अनिल कुमार तोमर को भारत सरकार ने 26 जनवरी 2022 को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार हवलदार अनिल कुमार तोमर, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त) की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

3. हवलदार काशीराय बम्मनल्ली, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), द कोर ऑफ इंजीनियर्स / 44वीं बटालियन राष्ट्रीय राइफल्स

01-02 जुलाई 2021 पुलवामा जिले के गांव में 04-05 आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सुराग के आधार पर, 01 जुलाई 2021 को घेरा डालकर तलाशी अभियान शुरू किया गया था। हवलदार काशीराय बम्मनल्ली युद्धक कार्रवाई दल (कॉम्बैट एक्शन टीम) का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने आतंकवादियों के संभावित भागने के मार्ग की घेराबंदी की।

23:15 बजे आतंकवादियों ने हवलदार काशीराय की दिशा में हथगोले फेंककर और अंधाधुंध फायरिंग कर भागने का प्रयास किया। हवलदार काशीराय ने दुश्मन के हमले का दिलेरी से जवाब दिया और आतंकवादियों को घर के अंदर वापस धकेल दिया। रात्रि 23:50 बजे घेरा तोड़ने के एक और हताश प्रयास में आतंकवादियों ने हथगोले फेंके और हवलदार काशीराय पर भारी गोलाबारी की। उनकी छाती पर गंभीर चोट लगने के बावजूद उन्होंने सटीक गोलाबारी से एक आतंकवादी का सफाया कर दिया। भारी खून बहने के बावजूद अपने फ्लैंक के लिए खतरे को भांपते हुए वह एक सुविधाजनक स्थान पर रेंगते हुए आगे बढ़े और करीब से तीन अन्य आतंकवादियों को भी घायल कर दिया जिससे उनके युद्धक कार्रवाई दल के अन्य सदस्यों की जान बच गई। ऐसा करते हुए हवलदार काशीराय बम्मनल्ली ने सर्वोच्च बलिदान दिया। एक आतंकवादी का सफाया करने, तीन अन्य आतंकवादियों को घायल करने, अपनी टीम के सदस्यों की जान बचाने और सर्वोच्च बलिदान देने के लिए उनके सैन्य-कौशल और असाधारण बहादुरी के लिए हवलदार काशीराय बम्मनल्ली को भारत सरकार ने शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार हवलदार काशीराय बम्मनल्ली, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त) की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

4. हवलदार पिंकू कुमार, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), जाट रेजिमेंट / 34वीं बटालियन राष्ट्रीय राइफल्स

27 मार्च 2021 को कश्मीर में एक ऑपरेशन के दौरान हवलदार पिंकू कुमार आंतरिक घेरा का हिस्सा थे। हवलदार पिंकू और उनके दोस्त सिपाही सुशील राठी आतंकवादियों के सबसे संभावित बचने के रास्ते को कवर कर रहे थे। 27 मार्च 2021 को लगभग 20:15 बजे रात में, दो आतंकवादी अंधाधुंध फायरिंग करते हुए और ग्रेनेड फेंकते हुए लक्ष्य छिपने के घर से बाहर निकल कर सड़क की ओर भागे। एक क्षण में लिए गए निर्णय में हवलदार पिंकू ने चतुराई से अपनी स्थिति को फिर से समंजित किया, सटीक गोलीबारी की और तुरंत एक कट्टर आतंकवादी को समाप्त कर दिया।

गोलीबारी के बाद के आदान-प्रदान में दूसरे आतंकवादी ने एक चक्कर लगाया और एक घर की दीवार के पीछे छिप गया। अपनी जान को जोखिम में डालकर, हवलदार पिंकू ने चुपके से छिपे हुए आतंकवादी को बंद कर दिया और उसे करीबी लड़ाई में शामिल कर लिया। सिर पर गोली के गंभीर घाव के बाबजूद गोलीबारी के दौरान हवलदार पिंकू ने दूसरे आतंकवादी को घायल कर दिया। बाद में हवलदार पिंकू की मौत हो गई। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, विशिष्ट बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन बलिदान करने के लिए, हवलदार पिंकू कुमार को भारत सरकार ने 26 जनवरी 2022 को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार हवलदार पिंकू कुमार, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त) की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

5. सिपाही मारुप्रोलू जसवंत कुमार रेड्डी, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त), 17वीं बटालियन मद्रास रेजिमेंट

08 जुलाई 2021 को 06:50 बजे, सिपाही मारुप्रोलू जसवंत कुमार रेड्डी ने स्काउट नंबर 2 के रूप में घने जंगलों और ऊबड़-खाबड़ इलाकों में तलाशी लेते हुए आतंकवादियों की हरकत को देखा और तुरंत उन्हें पकड़ लिया। उसके बाद हुई गोलाबारी में, सिपाही मारुप्रोलू जसवंत कुमार रेड्डी ने प्रभावी गोलाबारी की और आतंकवादियों के भागने के सबसे संभावित मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया और आमने-सामने की लड़ाई में एक आतंकवादी का सफाया कर दिया।

जब वह अन्य आतंकवादियों को काबू में करने के लिए आगे बढ़े, तो देखा कि उनके टीम कमांडर आतंकवादी की गोलीबारी के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्होने तुरंत आतंकवादियों को मारने के लिए हथगोले फेंके और उसे कवर करने के लिए अपने टीम कमांडर की ओर तेजी से रेंगते हुए गए। ऐसा करने में, वह आतंकवादियों की भारी गोलाबारी की चपेट में आ गए और गंभीर रूप से घायल हो गए। लेकिन अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों को उलझाकर रखना जारी रखा और अपनी चोटों के कारण दम तोड़ देने से पहले अपने टीम कमांडर को कवर के नीचे खींच लिया। विशिष्ट बहादुरी, गोलीबारी के दौरान साहस और अद्वितीय एस्प्रिट-डी-कॉर्प्स के प्रदर्शन के लिए सिपाही मारुप्रोलू जसवंत कुमार रेड्डी को भारत सरकार ने 26 जनवरी 2022 को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार सिपाही मारुप्रोलू जसवंत कुमार रेड्डी, शौर्य चक्र (मरणोपरान्त) की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

6. राइफलमैन राकेश शर्मा, शौर्य चक्र, 5 असम राइफल्स

राइफलमैन (सामान्य ड्यूटी) राकेश 22/23 मई 2021 को असम के एक गाँव में जबरन वसूली और नागरिकों की हत्या के लिए विद्रोहियों के आने की सूचना मिलने के बाद तैनात किए गए एक घातदल का हिस्सा थे। परिचालन संपर्क 02:00 बजे स्थापित किया गया था और भारी गोलाबारी के साथ इनकी टुकड़ी ने चार विद्रोहियों के निष्प्रभावी होने की पुष्टि की थी।

04:00 बजे, राइफलमैन राकेश ने घात में एक त्रुटि को भांपते हुए अपने दोस्त राइफलमैन रॉबिन्सन के साथ अपने स्थान को पुनर्गठित किया। खाई को पाटने के लिए शिफ्ट करते समय उन्होंने घात के टेल एंड से भारी गोलाबारी की। राइफलमैन राकेश ने दो विद्रोहियों को घने पर्णसमूह की आड़ में छिपकर भागते हुए देखा और तुरंत अपने दोस्त की गोलीबारी का कवर लेकर जंगल के माध्यम से पीछा किया और भागने के मार्ग को काटने के लिए बंद कर दिया। राइफलमैन राकेश ने भाग रहे विद्रोही को गोली मार दी। लेकिन इस क्रम में उनके कवर से बाहर होने के कारण दूसरे विद्रोही ने उनके ऊपर भारी गोलाबारी की। फौलादी हिम्मत और त्वरित सोच का प्रदर्शन करते हुए,

वह गिरे हुए पेड़ का कवर लेने के लिए रेंगते रहे। शानदार लड़ाकू शूटिंग का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने दूसरे विद्रोही को भी मार गिराया। दो खूंखार विद्रोहियों का सफाया करते हुए उनके असाधारण सामरिक कौशल, निस्वार्थता, प्रेरक नेतृत्व और साहस के लिए राइफलमैन राकेश शर्मा को भारत सरकार ने 26 जनवरी 2022 को शौर्य चक्र से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार राइफलमैन राकेश शर्मा, शौर्य चक्र की नेतृत्व-क्षमता, बहादुरी और अद्भुत रणकौशल को सलाम करता है।

जब अन्त समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़ुर्बानी।

- कवि प्रदीप

नारी

(अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष)

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

नारी ! नर जिसका आभारी,
जिसकी स्नेहिल उपस्थिति से, घर बनता फुलवारी

उसके बिन सब प्राणहीन हैं, लगें पुराने जो नवीन हैं
सब कुछ रहते दीन-हीन हैं, पंक सने हैं जो ज़रीन हैं
धरा को उसने धारी।

नर की ताक़त बौनी होती, उसकी हिम्मत साथ न होती
जितनी पाती उतनी खोती, भर-भर झोली हीरे मोती
बल के ऊपर भारी।

उसकी नेह से सिंचे उपवन, खप जाती लेकर वह तन मन
है कृतज्ञ सृष्टि का कण-कण, गाथा गाए जीवन प्रतिक्षण
उम्र की घड़ियाँ सारी।

बेटी, बहन, पत्नी, माता, कितने साँचे दिए विधाता !
नेह-डोर से बँधता नाता, सचमुच वह कितना है भाता
सम्बन्धों की क्यारी।

सृजन शक्ति की मूर्त रूप है, ऊपर छाँव तो कहीं धूप है
ममता धीरज का स्वरूप है, महिमा अद्भुत औ अनूप है
दुख में वह सुखियारी।

ऊर्जा की आधारशिला वह, आगे बढ़ने को आतुर वह
आए कोई मार्ग भयावह, महौदधि या कोई महीदह
जीत चुनौती सारी।

कदम से कदम मिलाएगी ही, सोपानों चढ़ जाएगी ही
अरमानों को पालेगी ही, जग को स्वत्व में ढ़ालेगी ही
बाधाएँ जो हारी।

गाओ उसके कीर्ति गान को, देखो उसके स्वाभिमान को
अनजानों में एक जान को, कई कुलों के एक मान को
नमती दुनिया सारी।

सीख सको तो सीखो तुम नर, नारी के व्यक्तित्व को उर धर
सहज स्मितता के सुन्दर पर, दोष-बलाएँ लेती जो हर
कैसे वह उजियारी।

"सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है।" - वाल्टर चेनिंग।

एक सफ़र

दीपेन्द्र कुमार राज
लेखापरीक्षक

मंज़िलों के मक़ाम ढूँढ़ते- ढूँढ़ते
कितने पड़ाव हम छोड़ आते हैं
कहाँ से शुरु किया था यह सफ़र
कहाँ इसे खत्म कर भूल जाते हैं।

बातों-मुलाक़ातों के सिलसिले भी
कभी अचानक से टूट जाते हैं
कहाँ खोए कहाँ रोए कब सोए
जगने पर ख़ुद को अकेले ही पाते हैं।

कोई आगे हो गया कोई पीछे रह गया
साथ एक दिन सबके ही छूट जाते हैं
कुछ बातें बन गईं तो कुछ बिगड़ भी गईं
शायद सब ख़्वाब थे, टूट जाते हैं।

लगती है कभी, बड़ी दूर है मंज़िल
न मालूम हमें न पूछ पाते हैं
चलते जाना है सफ़र में बस यूँ ही
ज़िन्दगी के पल ऐसे ही बीत जाते हैं ।

बेटी

सुरेश कुमार
लेखापरीक्षक

बिन बेटी ये मन बेकल है, बेटी है तो ही कल है,

बेटी से संसार सुनहरा, बिन बेटी क्या पाओगे?

बेटी नयनों की ज्योति है, सपनों की अंतरज्योति है,

शक्तिस्वरूपा बिन किस देहरी-द्वारे दीप जलाओगे?

शांति-क्रांति-समृद्धि-वृद्धि-श्री सिद्धि सभी कुछ है उनसे,

नजर चुराओगे तो किसका मान बढ़ाओगे ?

सहगल-रफ़ी-किशोर-मुकेश और मन्ना दा के दीवानों!

बेटी नहीं बचाओगे तो लता कहां से लाओगे ?

सारे खान, जॉन, बच्चन द्वय रजनीकांत, ऋतिक, रनबीर

रानी, सोनाक्षी, विद्या, ऐश्वर्या कहां से लाओगे ?

अब भी जागो, सुर में रागो, भारत मां की संतानों!

बिन बेटी के, बेटे वालों, किससे ब्याह रचाओगे?

बहन न होगी, तिलक न होगा, किसके वीर कहलाओगे?

सिर आंचल की छांह न होगी, मां का दूध लजाओगे।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी

– राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

कुछ रह तो नहीं गया

रितु मोटवानी
व.ले.प.अ

तीन महीने के बच्चे को पालनाघर में
रखकर नौकरी पर जानेवाली माँ को पड़ोसी ने पूछा
कुछ रह तो नहीं गया ? खाना, बैग इत्यादि सब ले लिया न ?

अब वो माँ कैसे कहे कि... पैसे के पीछे भागते-भागते
सब कुछ पाने की ख्वाहिशों में वह जिसके लिए
सब कुछ कर रही है, वह ही रह गया।

बड़ी तमन्नाओं के साथ बेटे की पढ़ाई के लिए
विदेश भेजा था और वह पढ़-लिखकर
विदेश में ही स्थाई रूप से बस गया
पोते के जन्म पर मुश्किल से तीन महीने का
वीजा मिला था और चलते वक्त बेटे ने
प्रश्न किया .... सब कुछ चेक कर लिया ना ?
कुछ रह तो नहीं गया ?
अब क्या जवाब देते कि अब छूटने को बचा ही क्या है ?

सेवानिवृत्ति की शाम सब ने याद दिलाया
सब कुछ जाँच लीजिए कुछ रह तो नहीं गया ?
थोड़ा रुक कर सोचा कि पूरी जिन्दगी
तो इसी दफ्तर में आने-जाने में बिता दी
अब और क्या रह गया होगा !

श्मशान से लौटते वक्त माँ ने बेटे को
एक बार कहा कि पिता की अंत्येष्टि में
कुछ रह तो नहीं गया .... तब बेटा बोला
अब पिता की मौत के बाद रह ही क्या गया है ?

एक बार समय निकालकर सोचें, शायद
पुराना समय याद आ जाए, आँखें भर आएँ
और आज को जी भर जीने का मकसद मिल जाए

सभी दोस्तों से यही कहना है कि यारों क्या
पता कब इस जीवन की शाम हो जाए
इससे पहले कि ऐसा हो, जी भर कर जियो
और जितनी सहायता हो सके करो
अच्छे कर्म करो, सेवा करो, पर ऐसा न हो कि
यह सब करने के लिए कुछ रह जाए

श्रद्धांजलि

(हेलिकॉप्टर दुर्घटना में शहीद जवानों को)

रितु मोटवानी
व.ले.प.अ

काल ने अकाल ही छीन लिए

तुमको हम सबसे अचानक

पर रहोगे तुम सदा हमारे

दिलों में अमर ज्योतिपुंज बनकर

स्वीकार करो हे भारत माँ के

इस वीर सपूत की पुष्पांजलि

याद रखेगा यह देश तुम्हें

सदा अमर वीरों की तरह

रहेगा सदा गर्व तुम पर

इस देश के सभी वासियों को

और सदा करते रहेंगे नमन

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता" – आचार्य विनोबा भावे

Life is Beautiful

रॉबर्ट सिम्टे
लेखापरीक्षक

Alas, What an hectic day ! he muttered
As he fell on his bed like a dead body
Few minutes later he woke up as usual
To get ready for evening walk in the park

Lazily he dragged himself as he reached the park
His Spirit lightened seeing lively kids around
Exercising for half an hour, he said "enough".
Heading home he met her again at the coffee stall.
An hour passed, before they realised it was late..
He was in Cloud Nine as they bade goodbye.
Smiling as he tucked himself to bed,
He exclaimed, "What a beautiful day it was!"

हिंदी अनुवाद (अनुवादक – जय राम सिंह)

काश, कैसा व्यस्त दिन रहा आज, वह बुदबुदाया
बेजान की तरह बिछावन पर गिरते हुए
कुछ ही मिनटों में वह फिर से उठ गया
पार्क में इवनिंग वॉक के लिए तैयार होते हुए

किसी तरह खुद को खींचकर ले गया पार्क तक
वहाँ बच्चों को देखकर वह उमंग से भर गया
आधे घंटे की कसरत ही काफी थी उसके लिए
लौटते समय उससे मिलते ही मन में रंग भर गया

दोनों को पता ही न चला कि एक घंटा कैसे बीत गया था
वहाँ से चलते समय उसके पाँव जमीन पर नहीं थे
इस बार बिछावन पर खुशी से लेटा था वह
मन कह रहा था – आज के क्षण भी कितने मधुर थे

“हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है” - विलियम केरी

Caught in the memories!

रॉबर्ट सिम्टे
लेखापरीक्षक

After an exciting year at boarding school,
I headed home after my Board exam.
Tears rolled down as I bade farewell,
For a new chapter in life was at dawn.

As we drove through the hills,
Autumn wind blew in all direction
Leaves falling made me wonder,
If they were bidding me goodbye.

Absorbed in the song playing in my walkman
I reminisced the amusing times we had.
Bumpy roads tossing us did not bother me.
Bittersweet I felt as we reached home at dusk.

यादों के झरोखे से (अनुवादक – जय राम सिंह)

आवासीय स्कूल में एक साल के सुखद अनुभव के बाद
बोर्ड एक्जाम के लिए मैं घर आया था
बिछुड़ते समय आँखों में आँसू थे
जिन्दगी की नई पारी का समय जो आया था

पहाड़ियों से गुजरते हुए
शीतल झोंके चहुँ ओर बह रहे थे
पेड़ों से गिरते पत्ते कुछ कह रहे थे
शायद हवाओं में गुड बाय बह रहे थे

अपने वॉकमैन में खोया हुआ
अचानक मुझे उन दिनों की याद आ गई
ऊबड़-खाबड़ सड़कें कभी डराती नहीं थी
शाम होते-होते यादों की तादाद आ गई।

"प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती" - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूकता

संकलनकर्ता – तुषार शंकर बने
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कई बार हमें ट्रकों, ऑटोरिक्शा या अन्य वाहनों के पीछे बहुत ही अच्छी पंक्तियाँ / शायरी पढ़ने को मिल जाती हैं। विश्वव्यापी महामारी कोरोना के काल में बचाव के लिए टीका (वैक्सीन) के प्रचार / प्रसार से संबंधित ऐसी ही कुछ रोचक पंक्तियों / शायरी का संकलन प्रस्तुत है:-

1. देखो, मगर प्यार से
   कोरोना डरता है वैक्सीन की मार से

2. मैं खूबसूरत हूँ मुझे नजर न लगाना
   जिन्दगी भर साथ दूँगी, वैक्सीन जरूर लगवाना

3. हँस मत पगली, प्यार हो जाएगा
   टीका लगवा ले, कोरोना हार जाएगा

4. टीका लगवाओगे तो बार-बार मिलेंगे
   लापरवाही बरतोगे तो हरिद्वार मिलेंगे

5. यदि करते रहना है सौंदर्य दर्शन रोज-रोज
   तो पहले लगवा लो वैक्सीन के दोनों डोज

6. टीका नहीं लगवाने से
   यमराज बहुत खुश होता है

7. चलती है गाड़ी, उड़ती है धूल
   वैक्सीन लगवा लो वरना होगी बड़ी भूल

8. बुरी नजरवाले तेरा मुँह काला
   अच्छा होता है वैक्सीन लगवानेवाला

9. कोरोना से सावधानी हटी
   तो समझो सब्जी-पूड़ी बँटी

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।"

- महात्मा गाँधी

अपेक्षा

तरुण बजाज
स.ले.प.अ.

नई नवेली दुल्हन को ब्याहे हुए कुछ सप्ताह का समय बीता था। यूँ तो उसके माँ-बाप ने पूरी जाँच पड़ताल के बाद ही इस घर में ब्याने का निर्णय लिया था। परन्तु नएपन के साथ आने वाली चुनौतिओं का सामना उसे अकेले ही करना था। नए घर में अन्य जिम्मेदारियों के साथ-साथ सबसे ज़्यादा चुनौतपूर्ण थी रसोई की कमान क्योंकि रसोई में उसका आना-जाना शादी के कुछ माह पूर्व ही आरंभ हुआ था। "बेटी, ससुराल में आज नहीं तो कल खाना तो तुझे पकाना ही पड़ेगा"- ऐसा अपनी माँ से कई बार सुनकर उसने मान लिया था कि शायद माँ सही हैं।

खुशकिस्मती से नए घर में सब सदस्य उसके द्वारा परोसे जाने वाले खाने की सराहना किया करते थे। नव-बहू के इस गुण का गुणगान पूरे टब्बर में झटपट हो गया। बस फिर क्या था जो लोग शादी में नहीं आ पाए थे वो नई बहू के द्वारा बनाया हुआ खाना खाने के अति इच्छुक थे। कहते तो थे कि हम उससे मिलना चाहते हैं पर असल वजह तो चहुँ ओर हुई उसके खाने की वाह-वाही थी। उसके हाथों से पका खाना खाने की उत्सुकता लिए एक दिन मौसी जी ने आने का एलान कर दिया। साथ में यह भी कहा कि हम भी तो देखें क्या जादू करती है वह व्यंजनों पर कि चारों तरफ वाह-वाही लूट रही है। नववधू उनसे मिलने की उत्सुक होने के साथ-साथ थोड़ा डर भी गई कि मौसी जी को मेरे हाथ का खाना कैसा लगेगा। जल्द ही वह दिन भी आ गया, मेहमानों से भरी महफ़िल में नववधू ने मेज पर भोजन परोसा। देखते ही देखते सारा खाना ख़त्म हो गया। नववधू के 'खाना कैसा लगा?' पूछे जाने पर मौसी जी ने जवाब में कहा - "रोज़-रोज़ तो पेट भर के खाते हैं, आज मन भर कर खाया है।" बैठक के कोने में खड़ी इस नए घर की नई दुल्हन फूली ना समा रही थी। परन्तु उसके मन का एक कोना इस बात को लेकर चिंतित था कि अगर मौसी जी को खाना पसंद ना आता तो वह क्या प्रतिक्रिया देती।

"राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

फायदे के लिए कुछ भी सही

तरुण बजाज
स.ले.प.अ.

अपने बाप की तरह शामिर भी शादीशुदा जीवन में छोटी उम्र में ही प्रवेश कर गया था। अभी उसका मन गली के बच्चों के साथ गिल्ली डंडा खेलने का करता था लेकिन नया सफ़र शुरू हो चुका था। अब उसे अपने ख्याल के साथ-साथ बनीरो का भी ख्याल रखना होता था। यह बात उसे थोड़ी देर से ही सही पर समझ में आने लगी थी। समाज की समझ और उठना-बैठना शामिर को थोड़ा कष्टदाई लगता था।

दिमाग से कम और दिल से ज़्यादा सोचने की आदत थी। बनीरो के बार-बार समझाने से भी शामिर के कानों पर जूं तक ना रेंगी। उसकी वजह से आए दिन नए-नए नुकसान झेलने पड़ते थे। जब बच्चे बड़े हो गए तो बनीरो ने पैसे कमाने का जिम्मा अपने सिर ले लिया। शामिर अब मजदूरी में दो पैसे कमाने के बजाय घर के कामकाज और बच्चों की देखरेख में अधिक समय देने लगा।

रोज़मर्रा की तरह एक शाम बनीरो दिहाड़ी मजदूरी कर के लौट रही थी और नगर के आखिर वाली दुकान से अपने बच्चों के लिए दूध ले रही थी। एक चीज उसने ठान रखी थी कि अपनी तरह वह अपने बच्चों की परवरिश में कमी नहीं होने देगी। तभी वहां खड़ा एक आदमी जो कि शक्ल-सूरत और वेश-भूषा से सभ्य समाज का लग रहा था, बनीरो को दूध का पैकेट पकड़वाने लगा जो कि उसने खुद से ख़रीदा था। साथ में यह भी कह रहा था कि तुम मेरे से दूध ले लो, मैंने गलती से ज़्यादा खरीद लिया है। दूध का पैकेट काले रंग की पॉलिथीन में होने कारण बनीरो को कुछ संदेह हुआ और उसने एकाएक पैकेट बाहर निकाल लिया। वो पैकेट लीक था इसलिए अच्छा दिखने वाला आदमी उसे बनीरो को बेचना चाह रहा था। पर बनीरो का बड़ी कोठियों में किए हुए काम का अनुभव और उनमें ठहरे जीवों के हाव-भाव को पढ़ने की समझ ने उसे नुकसान होने से बचा लिया। उसके पैकेट को सहजता से वापिस करने से आदमी चिढ़ गया और मुँह फुलाता वहां से निकल गया।

दिनभर की थकान जो बच्चों से मिलकर अपने आप मिट जाती है, मन में इस उत्साह के साथ बनीरो अपनी झुग्गी की तरफ बढ़ चुकी थी। चलते-चलते यह सोच रही थी कि शामिर को घर जा कर बताउंगी कि आज बड़ा नुकसान होने से बच गया। मन ही मन वह जानती थी कि शामिर काला पैकेट बिना जाँचे घर ले आता। वहीं गल्ले पर खड़ा दुकानदार जो अचंभित हो पूरा वाकया देख रहा था, विचार करने पर मजबूर हो गया कि कैसे दोनों व्यक्तियों की सूरत और सीरत की परख में धरती-आसमान का फ़र्क था।

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" - स्वामी दयानंद।

महिला सशक्तिकरण

नयना केळसकर
सहायक पर्यवेक्षक

किसी भी समाज का स्वरूप वहां की महिलाओं की स्थिति एवं दशा पर निर्भर करता है। वह समाज भी सुदृढ़ और मजबूत होता है जिस समाज में महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ और सम्मानजनक होती है। यदि देखा जाए तो आधुनिक काल की अपेक्षा प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अधिक दृढ़ थी। उन्हें पुरुषों के समान अधिकार भी प्राप्त थे तथा समस्त सामाजिक-धार्मिक कार्य-कलापों में उनकी सहभागिता अनिवार्य थी।

झाँसी की रानी, अहिल्याबाई होल्कर जैसी वीरांगनाएँ; मैत्रेयी, लोपामुद्रा गार्गी, अपाला जैसी विदुषी नारियाँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कालांतर में भारत पर होने वाले लगातर विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे महिलाओं की स्थिति में गिरावट आती गई और वर्तमान में दुखद स्थिति यह है कि हम महिलाओं के सशक्तीकरण पर चर्चा कर रहें है। नारी जो स्वयं में शक्तिस्वरूपा है, अन्नपूर्णा है, सृष्टि का प्रमुख आधार है, उसके सशक्तीकरण पर विचार-विमर्श किया जा रहा है।

वस्तुतः भारत का सामाजिक ढाँचा ही महिलाओं और पुरुषों के लिए पृथक भूमिकाओं का निर्धारण करता है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में प्रत्येक स्तर पर महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। आज अमेरिका सहित विश्व का कोई भी राष्ट्र यह दावा कर पाने में सर्वथा असमर्थ है कि उसके यहां किसी भी रूप में महिलाओं का उत्पीड़न नहीं किया जाता।

लंबे संघर्ष के पश्चात भारतीय महिलाओं ने समाज में अपनी स्थिति में सुधार ला पाने और समाज में अपना कुछ स्थान बनाने में सफलता अर्जित की है। महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। राजनीति, विज्ञान, शिक्षा, उद्योग, व्यापार, मीडिया, खेल आदि क्षेत्रों में महिलाएँ तेजी से आगे बढ़ रही हैं। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स और सिरीशा बुंदेला आदि कुछ नाम इसके ज्वलन्द उदारहण हैं। किंतु ये सभी महिलाएँ अपने दम पर आगे बढ़ी हैं, समाज और सिस्टम का योगदान इनकी सफलता में न के बराबर है। इस कारण से इन गुणात्मक परिवर्तनों की गति काफी अधिक धीमी है।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में ठोस प्रयास करते हुए सरकार द्वारा 1985 में महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना तथा 31 जनवरी, 1992 को राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई। 1992 से देश में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा। भारत सरकार ने वर्ष 2001 को महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया। महिलाओं के कल्याण हेतु सरकार द्वारा कई योजनाओं एवं कार्यक्रमों का कार्यान्वयन किया गया है जैसे महिला समृद्धि योजना, इंदिरा महिला योजना, स्वयंसिद्धा योजना आदि। सरकार द्वारा महिलाओं की प्रगति की दिशा में किए गए इतने प्रयासों के बावजूद भारतीय समाज में महिलाओं की दशा सोचनीय है। कन्या आज भी अधिकांश भारतीय घरों में अनचाही संतान है। यही पसंद-नापसंद लैंगिक भेदभाव का सर्वप्रमुख कारण है जो परिवार के स्तर से आरंभ होकर महिलाओं के प्रति हिंसा को प्रोत्साहित करता है। यही कारण महिलाओं को समाज में पुरुषों

के समान अधिकार एवं स्वतंत्रता का उपयोग करने से रोकता है। समाज में महिलाओं की दुर्दशा का एक अन्य प्रमुख कारण सरकारी योजनाओं का उचित क्रियान्वयन न होना है। योजनाओं का उचित क्रियान्वयन न होने के कारण अपेक्षित परिणामों की प्राप्ति नहीं होती है।

यह कहा जाता है कि महिलाओं की बदतर स्थिति के लिए अकुशल प्रबंधन के साथ-साथ समाज भी समान रूप से उत्तरदायी है। महिलाओं की स्थिति को निम्नतर बनाने वाली सामाजिक परंपराएं समाप्त की जानी चाहिए। महिलाओं को साक्षर बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जाने चाहिए। महिलाओं की गरिमा का सम्मान किया जाना चाहिए। उत्पीड़ित महिलाओं को सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा पर्याप्त सहायता दी जानी चाहिए तथा महिलाओं के लिए स्वरोजगार योजनाओं आदि को प्रारंभ किए जाने चाहिए।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों को सफल बनाने हेतु यह आवश्यक है कि समाज की मानसिकता, विशेषतः स्वयं महिलाओं की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाए। समाज महिलाओं को मात्र महिला की दृष्टि से न देखे परन्तु उसे एक मनुष्य माने तथा महिलाएं भी स्वयं को अबला नहीं सबला समझे।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समय-समय पर आयोजित होने वाली सम्मेलनों में महिला सशक्तिकरण संबंधी विचारों से इस तथ्य को बल प्राप्त होता है कि यह वर्तमान समाज की आवश्यकता है, किंतु लंबे-चौड़े भाषणों और वाद-विवादों मात्र से महिलाओं का प्रगति संभव नहीं है। इसके लिए समाज को महिला सशक्तिकरण के पौधे को अपने प्रयासों रूपी जल से सींचना होगा, महिलाओं को उनकी खोई हुई प्रतिष्ठा एवं सम्मान उन्हें पुनः लौटना होगा, इन सबसे ऊपर नारी को अपने अस्तित्व, अपने 'स्व' की पहचान बनानी होगी। जिस दिन ऐसा होगा उसी दिन महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

२१ वीं सदी के भारत में निश्चित रूप से नारी की स्थिति में कुछ सुधार हुए हैं। महिला अधिकारों के प्रति समाज भी सचेत हो रहा है। पहले उनकी आवाज बाहर नहीं आती थी, वहीं आज जागरूक मीडिया से उन्हें सहायता मिल रही है। शहरों मे विशेष रूप से वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई दे रही हैं। आज उनका कार्य क्षेत्र भी घर की संकुचित चारदीवारी से बाहर जा पहुँचा है। वे सरकारी, अर्द्ध सरकारी, निजी क्षेत्र हो या फिर खेल जगत तथा होटलों, अदालतों, शिक्षा, संस्थाओं एवं संसद में भी एक अच्छी संख्या में दिखाई दे रही हैं। परन्तु सवाल यह है कि ऐसी महिलाएँ कितनी हैं ? महिलाओं को सामाजिक हाशिए से हटाकर समाज की मुख्य धारा में लाना, निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना, उनमें पराश्रितता की भावना और हीन भावना को समाप्त करना ही सच्चे अर्थों में महिला सशक्तीकरण है।

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" - डॉ. राजेंद्र प्रसाद

क्रोध का उपचार

प्रवीण नाफाड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक महिला को बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। उसकी इस आदत से पूरा परिवार परेशान था। उसकी इस आदत की वजह से आए दिन घर में कलह का माहौल रहता था। इस बात से वह महिला भी परेशान हो गई थी। वह बहुत प्रयास करती, अपने गुस्से को शान्त करने की, लेकिन उसका गुस्सा ज्यों का त्यों रहता। एक दिन उस महिला के दरवाजे पर एक साधु आए। महिला ने साधु से अपने मन की व्यथा बताई। साधु ने कहा – चिन्ता मत करो, ठीक हो जाएगा। साधु ने एक शीशी महिला को दी और कहा कि अब से जब भी तुम्हें गुस्सा आए तो इस शीशी से दवा की चार बूँदें अपनी जीभ पर डालकर मुँह बन्द कर लेना। कम से कम दस मिनट तक ऐसे ही दवा को मुँह में रखना, फिर निगल जाना, अन्यथा दवा का असर नहीं होगा। महिला ने उसी दिन से साधु की दी दवा का प्रयोग शुरु कर दिया। जब भी उसे गुस्सा आता वह साधु की दी दवा की चार बूँदें जीभ पर डालकर मुँह बन्द कर लेती। एक सप्ताह में ही बात-बात में गुस्सा करने की उसकी आदत छूट गई। महिला निहाल हो गई। उसका घर अब स्वर्ग जैसा लगने लगा था। सर्वत्र शांति थी। परिजनों में आपसी प्रेम बढ़ गया था। सभी अपने-अपने काम में पूरे मनोयोग से लगे थे। जिस रोग का उपचार किसी दवा से नहीं हो पा रहा था, उसका उपचार एक साधु की दी दवा से हो गया था, वह भी इतनी आसानी से। कुछ दिनों बाद वही साधु फिर से उस महिला के दरवाजे पर आए। साधु को देखते ही महिला उनके चरणों में गिर पड़ी। उसने कहा – महाराज, आप भगवान हैं। आपकी दवा से मेरा क्रोध शांत हो गया। अब मुझे गुस्सा नहीं आता। मेरे परिवार में शांति का माहौल हो गया है। यह और कुछ नहीं, बस आपकी कृपा का चमत्कार है। साधु ने महिला को आशीर्वाद दिया और कहा – बेटी, वह कोई चमत्कारी दवा नहीं थी, सिर्फ पानी था। क्रोध का उपचार सिर्फ चुप रहकर ही किया जा सकता है। इसीलिए मैंने तुम्हें दस मिनट तक मुँह खोलने से मना किया था। क्रोध के वशीभूत होकर व्यक्ति अपना विवेक खो देता है और उल्टा-सीधा बोलने लगता है। फलस्वरूप विवाद बढ़ता है। क्रोध का कोई इलाज नहीं है, सिवा मौन के। एक मौन सौ आवाजों का मुकाबला कर सकता है। इसीलिए तो कहा गया है – मौनं सर्वार्थ सिद्ध्यते।

"समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है।"

-सर जार्ज ग्रियर्सन।

सास से छुटकारा

सुरेश कुमार
लेखापरीक्षक

एक महिला विवाह के बाद अपने पति और सास के साथ अपने ससुराल में रहने लगी। कुछ ही दिनों बाद महिला को आभास होने लगा कि उसकी सास के साथ पटरी नहीं बैठ रही है। सास पुराने ख़यालों की थी और बहू नए विचारों वाली। महिला और उसकी सास का आये दिन झगड़ा होने लगा। दिन बीते, महीने बीते, साल भी बीत गया। न तो सास टीका-टिप्पणी करना छोड़ती और न बहू जवाब देना। हालात बद से बदतर होने लगे।

महिला को अब अपनी सास से पूरी तरह नफरत हो चुकी थी। महिला के लिए उस समय स्थिति और बुरी हो जाती जब उसे भारतीय परम्पराओं के अनुसार दूसरों के सामने अपनी सास को सम्मान देना पड़ता। अब वह किसी भी तरह सास से छुटकारा पाने की सोचने लगी।

एक दिन जब महिला का अपनी सास से झगड़ा हुआ और पति भी अपनी माँ का पक्ष लेने लगा तो वह नाराज़ होकर मायके चली आई। महिला के पिता आयुर्वेद के डॉक्टर थे। उसने रो-रो कर अपनी व्यथा पिता को सुनाई और बोली – "आप मुझे कोई जहरीली दवा दे दीजिये जो मैं जाकर उस बुढ़िया को पिला दूँ, नहीं तो मैं अब ससुराल नहीं जाऊँगी..."। बेटी का दुःख समझते हुए पिता ने बेटी के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा – "बेटी, अगर तुम अपनी सास को ज़हर खिला कर मार दोगी तो तुम्हें पुलिस पकड़ ले जाएगी और साथ ही मुझे भी क्योंकि वो ज़हर मैं तुम्हें दूंगा। इसलिए ऐसा करना ठीक नहीं होगा।" लेकिन महिला जिद पर अड़ गई – "आपको मुझे ज़हर देना ही होगा ....अब मैं किसी भी कीमत पर उसका मुँह देखना नहीं चाहती !"

कुछ सोचकर पिता बोले – "ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन मैं तुम्हें जेल जाते हुए भी नहीं देख सकता इसलिए जैसे मैं कहूँ, वैसे तुम्हें करना होगा ! मंजूर हो तो बोलो ?" "क्या करना होगा ?", बेटी ने पूछा। पिता ने एक पुड़िया में ज़हर का पाउडर बाँधकर बेटी के हाथ में देते हुए कहा – "तुम्हें इस पुडिया में से सिर्फ एक चुटकी ज़हर रोज़ अपनी सास के भोजन में मिलाना है। कम मात्रा होने से वह एकदम से तत्काल नहीं मरेगी बल्कि धीरे-धीरे आंतरिक रूप से कमजोर होकर पाँच से छह महीनों में मर जाएगी। लोग समझेंगे कि वह स्वाभाविक मौत मर गई।" पिता ने आगे कहा -"लेकिन तुम्हें बेहद सावधान रहना होगा ताकि तुम्हारे पति को बिलकुल भी शक न होने पाए वरना हम दोनों को जेल जाना पड़ेगा ! इसके लिए तुम आज के बाद अपनी सास से बिलकुल भी झगड़ा नहीं करोगी बल्कि उसकी सेवा करोगी।

यदि वह तुम पर कोई टीका टिप्पणी करती है तो तुम चुपचाप सुन लोगी, बिलकुल भी प्रत्युत्तर नहीं दोगी ! बोलो, कर पाओगी ये सब ?" महिला ने सोचा, छह महीनों की ही तो बात है, फिर तो छुटकारा मिल ही जाएगा। उसने पिता की बात मान ली और ज़हर की पुड़िया लेकर ससुराल चली आई। ससुराल आते ही अगले ही दिन से महिला ने सास के भोजन में एक चुटकी ज़हर रोजाना मिलाना शुरू कर दिया। साथ ही उसके प्रति अपना बर्ताव भी बदल लिया। अब वह सास के किसी भी ताने का जवाब नहीं देती, बल्कि क्रोध को पीकर मुस्कुराते हुए सुन लेती।

महिला रोज़ उसके पैर दबाती और उसकी हर बात का ख़याल रखती। सास से पूछ-पूछ कर उसकी पसंद का खाना बनाती, उसकी हर आज्ञा का पालन करती। कुछ हफ्ते बीतते-बीतते सास के स्वभाव में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया। बहू की ओर से अपने तानों का प्रत्युत्तर न पाकर उसके ताने अब कम हो चले थे। बल्कि वह कभी-कभी बहू की सेवा के बदले आशीष भी देने लगी थी। धीरे-धीरे चार महीने बीत गए। महिला नियमित रूप से सास को रोज़ एक चुटकी ज़हर देती आ रही थी। किन्तु उस घर का माहौल अब पूरी तरह बदल चुका था। सास-बहू का झगड़ा पुरानी बात हो चुकी थी।

पहले जो सास बहू को गालियाँ देते नहीं थकती थी, अब वही आस-पड़ोस वालों के आगे बहू की तारीफों के पुल बाँधने लगी थी। बहू को साथ बिठाकर खाना खिलाती और सोने से पहले भी जब तक बहू से चार प्यार भरी बातें न कर ले, उसे नींद नहीं आती थी। छठा महीना आते-आते महिला को लगने लगा कि उसकी सास उसे बिलकुल अपनी बेटी की तरह मानने लगी हैं। उसे भी अपनी सास में माँ की छवि नज़र आने लगी थी।

जब वह सोचती कि उसके दिए ज़हर से उसकी सास कुछ ही दिनों में मर जाएगी तो वह परेशान हो जाती थी। इसी ऊहापोह में एक दिन वह अपने पिता के घर दोबारा जा पहुंची और बोली – "पिताजी, मुझे उस ज़हर के असर को ख़त्म करने की दवा दीजिये क्योंकि अब मैं अपनी सास को मारना नहीं चाहती ... ! वो बहुत अच्छी हैं और अब मैं उन्हें अपनी माँ की तरह चाहने लगी हूँ!" पिता ठठाकर हँस पड़े और बोले – "ज़हर ? कैसा ज़हर ? मैंने तो तुम्हें ज़हर के नाम पर हाजमे का चूर्ण दिया था ... हा हा हा.

"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"

- वाल्टर चेनिंग

तुम्हारे बारे में

जिज्ञासु पंत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तुम्हारे बारे में अक्सर तुम्हारे न होने पर ज़िक्र होता है। तुम हमेशा कहती थी – मेरे बारे में कब लिखोगे ? शायद आज ही वह दिन है। मेरा मन आज तुम्हारे ही बारे में लिखने को कह रहा है। लेकिन, स्पष्ट कर दूँ कि यह लेखन मेरा मस्तिष्क नहीं, वरन मेरा दिल कर रहा है।

बैडमिंटन खेलना मुझे बचपन से ही पसन्द था। पूरे साल मेहनत करता था; सिर्फ एक नैशनल सेलेक्शन के लिए और वह एक टूर्नामेंट फिर ख़ुद में एक कहानी बन जाता। पहली बार जब तुमने पुणे नैशनल में मेरा हाथ पकड़ा, उस दिन से बैडमिंटन का बुख़ार मेरे सिर चढ़ गया। स्वयं खेलने से ज़्यादा तुम्हें कोर्ट में खेलते देखना अच्छा महसूस होता। तुम्हारा मैच अनाउंस होते ही दर्शकों की भीड़ लग जाती और मैं उस भीड़ में कहीं गुम हो जाता। कई वर्षों तक मैं उस भीड़ का हिस्सा बना रहा। पर, कभी भी सामने जाकर कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया कि वाकई तुम बहुत अच्छा खेलती हो। शायद इसलिए कि तुम सफलताओं के शिखर पर थी और मैंने खेलना बस शुरु ही किया था। तुम्हें देखने के लिए 70 किमी का सफ़र फट से कट जाता और ऐसे ही साल-दर-साल निकल जाते, पता ही नहीं चलता। दिसम्बर की ठंढ़ में सिर्फ़ तुम्हें दूर से हैप्पी बर्थडे कहने का मोटिवेशन कहीं से तो आ ही जाता था। दिल में एक खुशी-सी रहती थी और मेहनत करने का जुनून भी। बैडमिंटन से मेरी मोहब्बत बढ़ती गई और साथ-साथ मेहनत भी।

कोई चार-पाँच साल तक यह सिलसिला चलता रहा। हमारे बीच 'आप' से 'तुम' की दूरी काफी कम हो गई थी। अब लगभग हर रोज़ बातें होने लगीं; फिर चाहे वह मिस्ड कॉल से ही क्यों न हो। अचानक एक दिन ख़बर मिली। तुम्हारे दाहिने घुटने का लिगामेंट टूट गया था। यह ख़बर सुनते ही एक अज़ीब सा सन्नाटा छा गया था मेरे मन में। मुझे तुम्हारा दर्द महसूस होने लगा था। मन को कई सारे सवालों ने घेर लिया और तत्काल चल पड़ा 300 किमी का सफ़र तय कर अगली सुबह तुम्हारे पैर पर लगा हुआ प्लास्टर देखने। तुम्हें देखकर यह महसूस हुआ – 'काश ! सच में हम दर्द बाँट पाते'। तुम्हारी आँखों में भविष्य का डर साफ़ झलक रहा था। पर, तुम्हारे चेहरे की मुस्कान मुझे अभी भी हिम्मत दे रही थी।

एक साल में रिकॉवर होकर तुमने वापस खेलना शुरु किया और आनेवाले टूर्नामेंट की तैयारी शुरु कर दी। स्टेट टूर्नामेंट से ठीक पहले वह हुआ जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। तुम्हारे बाँए पैर का लिगामेंट भी टूट गया था। इस ख़बर ने मुझे अन्दर से तोड़ दिया। मन को कई सवालों ने घेर लिया, जैसे कि क्या हम साथ में कभी टूर्नामेंट्स खेलने नहीं जा पाएँगे? क्या मैं तुम्हें वापस कभी उस भीड़ के बीच खेलता हुआ देख पाउँगा ? आदि आदि।

दिन, महीने, साल बीतते गए पर तुम्हारी कोई ख़बर नहीं मिली। कहीं से मालूम हुआ कि तुम खेलना छोड़ कर पढ़ाई की तरफ ध्यान देने लगी हो। उस दिन मेरा मन खेलने में बिल्कुल नहीं लग रहा पाया। जिस खेल से मुझे मोहब्बत थी, उस पर गुस्सा आने लगा। क्या मिलेगा खेल कर, सिर्फ़ दर्द ! उदास मन में यही ख़्याल आता रहता। पर, फिर तुम्हारी एक कॉल ने मुझे हिम्मत दिलाई – "कुछ भी हो, तुम मेहनत करना कभी मत छोड़ना", और इस बात पर मैंने ठान लिया कि खेलूँगा।

आज उसी खेल के दम पर विभाग की पत्रिका में तुम्हारे बारे में लिख पा रहा हूँ। दोनों पैरों का ऑपरेशन कराके तुमने उसी खेल का कोच बनने का निर्णय ले लिया है जिसने मेरे गेम में वापस एक नई जान डाल दी है। पाँच साल मेहनत करके 100 से अधिक बच्चों को खेलना सिखा कर तुमने साबित कर दिया कि एक खिलाड़ी कभी हार नहीं मान सकता। जो बीज़ तुमने बोए हैं वे ज़रूर तुम्हारे सपनों को साकार करेंगे।

अब तुम मेरी भी ताउम्र कोच बनकर सभी टूर्नामेंट्स में मुझे गाइड करती हो। फ़र्क बस इतना है कि तुम मुझे कोर्ट में खेलते देखती हो और लोग मुझसे '**तुम्हारे बारे में**' पूछते रहते हैं।

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

इच्छा से लालच, लालच से विनाश

अंकित आज़ाद
स.ले.प.अ.(पी.)

"धरती के पास अपनी संतानों की ज़रूरतों को पूरा करने का सामर्थ्य है, उनकी लालच को नहीं।" यह प्रसिद्ध उक्ति राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की है। उनके ज्ञान और दूरदृष्टि ने लालच से उत्पन्न होनेवाले दुष्प्रभावों को जान लिया था। अधिक से अधिक पाने और पाते रहने की कोई सीमा नहीं होती। इस धरती पर मनुष्य एकमात्र प्राणी है जिसके पास अपनी ज़रूरतों के लालच में बदल देने की क्षमता है। सिंह तभी शिकार करता है जब उसे भूख लगती है। जब पेट आवाज़ दे तभी हिरण घास चरता है।

दूसरे शब्दों में सभी जानवर सिर्फ अपनी ज़रूरतों को पूरा कर संतुष्ट हो जाते हैं। लेकिन मनुष्य, संतुष्ट होना तो दूर, आज तक ठीक से अपनी ज़रूरतों को ही परिभाषित नहीं कर पाया है। मनुष्य की भूख सिर्फ भोजन तक ही सीमित नहीं है। मनुष्य ने अपनी भूख को इतना विस्तार दे दिया है जहाँ ज़रूरत लालच बन गई है। धन की भूख, शक्ति की भूख, प्रसिद्धि की भूख, प्रतिष्ठा की भूख इत्यादि कभी तृप्त नहीं होती। यह लालच हमारे अन्दर इतनी पैठ बना चुकी है कि हम इसके सम्भावित खतरे को न देख पाते हैं और न ही भाँप पाते हैं।

अनादि काल से कुर्सी की राजनीति ने मानव जाति में लालच को फलने-फूलने का भरपूर अवसर दिया है। कालजयी कथा 'महाभारत' भी तो यही कहती है कि किस तरह असंतुष्ट लालच ने कई पीढ़ियों को बर्बाद कर दिया। चौसर के खेल में पांडव कौरवों से लगातार हर बाजी हारते रहे। लालच के अन्धेपन ने द्रौपदी तक को दाँव पर लगाने से पांडवों को नहीं रोका। कुछ लोग कहते हैं कि द्रौपदी का चीरहरण महाभारत का प्रधान कारण था। लेकिन चीरहरण की नौबत आई कैसे ? लालच के कारण ही न ! लालच ने एक महिला की गरिमा का भी ख्याल नहीं रखा। भयंकर रक्तपात और कौरवों का सम्पूर्ण विनाश लालच के ही परिणाम थे। पलासी की लड़ाई के बाद ब्रिटिश शासन आधिकारिक रूप से भारत में स्थापित हो गया था। यह युद्ध लालच का ही परिणाम था जिसने आगे आनेवाली पीढ़ियों को अकथनीय दुख दिए। बंगाल के नवाब को गद्दी से हटाने के लिए रॉबर्ट क्लाइव ने एक साजिश रची। नवाब के विश्वस्त मीर ज़ाफर ने इस युद्ध में निर्णायक भूमिका अदा की। कुर्सी के लालच में मीर ज़ाफर ने नवाब के साथ गद्दारी कर दी। कुर्सी की भूख के कारण उसने अँग्रेजों का साथ दे दिया।

आजकल की राजनीति में कुर्सी के लिए कोई भी हथकंडा अपनाना और कुछ भी करना जायज माना जाता है। यमन, सीरिया, अफगानिस्तान, इराक, सूडान आदि देशों में परस्पर विरोधी लालचों के युद्ध ने सारी सीमाएँ पार कर दी हैं। ये सभी देश पूरी तरह जर्जर हो चुके हैं क्योंकि लोगों के स्वार्थ संतुष्ट नहीं हो पाए हैं। पश्चिमी देशों के अपने निहित स्वार्थ हैं। सऊदी अरब जैसे राजतंत्र इन देशों पर अपनी दादागिरि स्थापित करना चाहते हैं। विश्व का हथियार बाज़ार अपने हथियारों की बिक्री चाहता है। रूस हमेशा ही पश्चिमी देशों से छत्तीस का आँकड़ा रखता है। इन सब बातों के सम्मिलित परिणामस्वरूप भुखमरी, रक्तपात और मानव सभ्यता का विनाश हमारे सामने है।

मानव जाति पर संकट तब उत्पन्न होता है जब मानव की ज़रूरत लालच बन जाती है, जहाँ सही-गलत का भेद, अच्छे-बुरे का भेद इत्यादि मिट जाते हैं। वैज्ञानिकों ने मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के कारण छठी व्यापक

विलुप्तीकरण की आशंका जताई है। जलवायु परिवर्तन जैसी विनाशकारी परिस्थितियों का निर्माण 19वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रान्ति से ही शुरु हो गया था। तब से लाखों-करोड़ों टन विघटनकारी ईंधनों को जलाया जा चुका है, अनगिनत पेड़ काटे जा चुके हैं, प्राणियों के प्राकृतिक निवास का मानव द्वारा अतिक्रमण धड़ल्ले से जारी है। ये सभी क्या हैं? सिर्फ लालच के परिणाम हैं न ? मानव ने भविष्य की पीढ़ियों को तो खतरे में डाला ही है, अपने अस्तित्व को भी संकट में डाल दिया है। सचमुच यह कितना विचित्र है कि सह-अस्तित्व की भावना को लालच के भूत ने निगल लिया है।

यदि हम छोटे स्तर पर देखें जहाँ सम्पत्ति के लिए भाई अपने भाई से लड़ रहा है, व्यापार में एक साझेदार दूसरे साझीदार को धोखा दे रहा है, लड़कियाँ दहेज की बेदी पर बलिदान दे रही हैं ..... ये सभी लालच के ही परिणाम हैं। लालच लालच है, बराबर लागू होती है, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करती। व्यंग्य की भाषा में कहें तो लालच संविधान के अनुच्छेद 15 का पूरी तरह पालन करती है। लेकिन तभी यह अनुच्छेद 21 का उल्लंघन भी करती है जब बेटे की लालच में बेटियों को गर्भ में ही मार दिया जाता है। ये सभी उदाहरण यही बताते हैं कि लालच हमारे अन्दर कितनी गहरी पैठ बना चुकी है। जाने-अनजाने में हमारे क्रिया-कलाप लालच से ही अब निर्देशित होने लगे हैं। ज़रूरत ज़रूरत ही रहे, लालच न बने, इसके लिए ज़रूरी है कि जीवन में नैतिकता का प्रवेश हो। हमें यह जानना चाहिए कि कहाँ रूकना है। विकल्पों को आजमाने की क्षमता सिर्फ मानव के पास है। धरती पर अन्य किसी प्राणी में ऐसी क्षमता नहीं है। अतः ईश्वर के इस वरदान को हमें व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

जीवन को लालची नहीं, सुन्दर बनाइए

रूस- यूक्रेन संकट : कौन सही कौन ग़लत

अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र.

रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण कर देने के बाद हमारे देश के बुद्धिजीवियों में गरमागर्म बहस छिड़ी हुई है – कौन सही है; रूस या यूक्रेन? इस बहस में अपनी – अपनी राजनीतिक वफादारी भी सिर चढ़कर बोल रही है। कोई रूस को दोषी ठहरा रहे हैं तो कुछ यूक्रेन को। कुछ के अनुसार सारा कराया-धराया अमेरिका का है। सोशल मीडिया तो अनगाइडेड मिसाइल की तरह है। तरह-तरह की कहानियों से सोशल मीडिया पटी पड़ी है। ऐसे में यह पता लगाना मुश्किल है कि कौन सही है और कौन ग़लत। यहाँ यह स्पष्ट कर दूँ कि युद्ध तो खुद ही एक समस्या है, यह कतई समाधान नहीं हो सकता। समाधान हमेशा बातचीत से ही निकलता है। जान-माल की बेतुकी बर्बादी को कोई भी सही नहीं ठहरा सकता। आइए, रूस- यूक्रेन संकट के असली कारणों की जड़ तक पहुँचने की कोशिश करते हैं।

1917 की महान कम्युनिस्ट क्रांति के बाद रूस और आसपास के छोटे-मोटे देशों को मिलाकर सोवियत संघ बना। लेनिन, स्टालिन , ख्रुश्चेव और ब्रेझनेव चार शासकों के शासनकाल तक 1982 आ गया। कहने को मार्च 1953 से सितम्बर 1953 तक मालेन्कोव भी हुए थे। 1982 में ब्रेझनेव की मृत्यु के बाद दो वर्षों के लिए आन्द्रोपोव और एक वर्ष के लिए चेरनेन्को राष्ट्रपति बने। 1985 में मिखाइल गोर्वाचेव सोवियत संघ के राष्ट्रपति बने। यहीं से पूरी कहानी शुरु होती है।

कम्युनिस्ट क्रांति के बाद से ही सोवियत संघ की राजनीतिक प्रणाली कुछ देशों की आँखों में खटक रही थी। स्टालिन ने औद्योगिक और सामरिक क्षेत्रों में भी अमेरिका को गम्भीर चुनौती दी। ब्रेझनेव के समय का शीत-युद्ध तो विश्व-विख्यात है ही। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अमेरिका ने नाटो बनाया तो जैसे को तैसा जवाब के तौर पर सोवियत संघ ने वारसा-समझौता बनाया। ये दोनों ही मूलतः सैन्य गठजोड़ थे जो एक दूसरे से लोहा लेने के लिए हर समय तैयार रहते थे। कुल मिलाकर लब्बो-लुवाब यही है कि अमेरिका सोवियत संघ की शक्ति को तोड़ने में नाकाम रहा, न आर्थिक रूप से, न राजनीतिक रूप से और न ही सामरिक रूप से। और तो और, सोवियत संघ अमेरिका की नाक के ठीक नीचे क्यूबा पहुँचकर उसे चिढ़ा रहा था और अमेरिका बेबस सब देख रहा था।

अमेरिकी जासूसी कम्पनी सीआईए लगातार इस प्रयास में थी कि सोवियत संघ को किसी तरह राजनीतिक रूप से विघटित करा दिया जाए। आर्थिक समृद्धि का सब्ज़बाग दिखाने का काम शुरु हो गया। यह सब्ज़बाग सोवियत संघ के नए-नवेले राष्ट्रपति मिखाइल गोर्वाचेव को बहुत पसन्द आया। उन्होंने सोवियत संघ में बिना सोचे समझे बड़े संस्थागत बदलाव शुरु कर दिए। ग्लास्तनोस्त और पेरेस्त्रोइका की अवधारणाएँ सामने लाई गई। ग्लास्तनोस्त सोवियत अर्थव्यवस्था को सरकारी नियंत्रण से बाहर करने की विचारधारा थी तो पेरेस्त्रोइका सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी में मूलभूत परिवर्तन लाकर अधिक से अधिक लोकतांत्रिक बनाने की कवायद थी। नोबेल शांति पुरस्कार की लालच में मिखाइल गोर्वाचेव वह सब करते चले गए जो उन्हें ज़रा सोच-समझकर करने चाहिए थे। उन्हें यह भी नहीं पता था कि अमेरिका डबल गेम भी खेल रहा था। इधर गोर्वाचेव की पीठ थपथपाई जा रही थी और उधर बोरिस येल्तसिन को गोर्वाचेव के खिलाफ़ तैयार किया जा रहा था।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है – महात्मा गाँधी

अमेरिकी षड्यंत्र की पहली सफलता थी 1989 में दोनों जर्मनियों का एकीकरण। पश्चिम जर्मनी ने वचन दिया था कि एकीकरण के पश्चात वह किसी सैन्य संगठन में शामिल नहीं होगा। लेकिन राजनीति में वचन दिए ही जाते हैं तोड़े जाने के लिए। एकीकरण हुआ और अगले ही दिन एकीकृत जर्मनी नाटो का सदस्य बन गया। लेकिन गोर्वाचेव साहब पर इस वचनभंगता का कोई असर नहीं पड़ा। जर्मनी के एकीकरण और सोवियत संघ में ग्लास्तनोस्त और पेरेस्त्रोइका की बहती बयार ने पूर्वी यूरोप के और भी कई कम्युनिस्ट देशों में राजनीतिक बदलाव की हवा बहा दी। तीनों बाल्टिक राज्य (एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया) ने एक साथ आज़ादी की माँग कर डाली। शुरुआत में रूसी सेना ने इन आवाजों को दबाने का प्रयास किया। लेकिन विश्व भर की भर्त्सनाओं और सोवियत संघ की राजनीतिक उदासीनता ने रूसी सेना का मनोबल तोड़ दिया। इन तीनों राज्यों ने 1990 में स्वयं को आजाद घोषित कर दिया। एक-एक कर सभी पूर्वी यूरोपीय देश पश्चिम के रंग में रंगते जा रहे थे और मिस्टर गोर्वाचेव नीरो की तरह ग्लास्तनोस्त और पेरेस्त्रोइका की वंशी बजा रहे थे। इस राजनीतिक आँधी ने सोवियत संघ के मूल घटक रूस के अलावा अन्य सभी घटकों को विलगाव के लिए प्रेरित किया। सीआईए अपना खेल खेल ही रही थी। डबल गेम के तहत बोरिस येल्तसिन ने मिस्टर गोर्वाचेव की नाक में दम कर दिया था। 1991 में यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ से अपनी आजादी की घोषणा कर दी। देखादेखी माल्दोवा, उज्बेकिस्तान, कज़ाकस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, जॉर्जिया, अजरबैजान और आर्मेनिया ने भी आजादी की घोषणा कर दी। रूस के नेता खुशी-खुशी सोवियत संघ का विघटन देखते रहे। 25 दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ का झंडा आधिकारिक रूप से क्रेमलिन से उतार दिया गया और रूस का झंडा लहरा दिया गया। इन सारे घटनाक्रम के मूल सूत्रधार अमेरिकी विदेशमंत्री बेकर थे। अमेरिका ने सभी 12 स्वतंत्र देशों को मान्यता दे दी। इस प्रकार देखते-देखते विश्व की एक महाशक्ति जिसका नाम सोवियत संघ था, ढ़ह गया और अस्तित्वहीन हो गया। इधर बोरिस येल्तसिन ने रूस के राष्ट्रपति पद की बागडोर सम्भाली। रूस और अमेरिका में एक समझौता हुआ जिसके तहत पुराने सोवियत संघ के सभी नाभिकीय हथियार रूस के नियंत्रण में आए और बदले में रूस ने सभी 12 देशों को सुरक्षा की गारंटी दी। इस समझौते में एक और बात थी जो अमेरिका की धूर्तता के कारण लिखी नहीं गई। वह बात थी कि इन बारह में से कोई भी देश नाटो या किसी भी अन्य सैन्य गठजोड़ का हिस्सा नहीं बनेगा क्योंकि उनकी सुरक्षा गारंटी रूस ने दी हुई थी।

समय के साथ नाटो का प्रभाव क्षेत्र और सदस्य संख्या दोनों बढ़ते गए। नाटो का प्रभाव धीरे-धीरे रूस की सीमा की ओर बढ़ने लगा। इधर रूस की बागडोर कट्टर राष्ट्रवादी व्लादिमिर पुतिन के हाथों में आ गई। अपने देश की सीमा पर अमेरिकी हथियारों की उपस्थिति रूस बर्दाश्त नहीं कर सकता था। लेकिन युक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेन्स्की कुछ और ही सोच रहे थे। उनका मानना था कि नाटो की सदस्यता लेकर वे रूस के प्रभाव से अपने देश को सदा-सदा के लिए मुक्त कर लेंगे। साथ ही अमेरिकी सहायता से युक्रेन में भी वैसी ही आर्थिक खुशहाली आ जाएगी जैसी यूरोप के पश्चिमी देशों में है। उनका आकलन अपनी तरह से जो भी हो, पर रूस यूक्रेन को ऐसा न करने के लिए समझाता रहा। पर, एक बार सनक आ जाए फिर वह जाती कहाँ है। युक्रेन नहीं माना। रूस भी नहीं माना और परिणाम सबके सामने है।

अब क्या कहा जाए - इस युद्ध में कौन सही है और कौन ग़लत।

राजभाषा अधिनियम 1976 की मुख्य बातें

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

1. i. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) संशोधन नियम, 2007 है।

   ii. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

   a. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

   b. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

      i. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

      ii. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

      iii. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

   c. 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

   d. 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

   e. 'हिंदी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

   i. "क्षेत्र क" से बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र' अभिप्रेत हैं; '

   j. "क्षेत्र ख" से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;"

   k. क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

   l. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. **राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-**

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिंदी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

i. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिंदी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिंदी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;

ii. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिंदी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

a. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

b. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

c. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिंदी में होंगे;

d. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिंदी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

e. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिंदी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि—

i. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

ii. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5. हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर—

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

6. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

i. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

ii. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

iii. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

i. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

ii. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

iii. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

iv. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा ।

9. हिंदी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

iii. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान-

1. a. यदि किसी कर्मचारी ने-

i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. केन्द्रीय सरकार की हिंदी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

iii. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

b. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12 अनुपालन का उत्तरदायित्व-

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-

   i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

   ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

भाषा ही किसी भी राष्ट्र का जीवन है और भारत का जीवन हिंदी है।

– पुरुषोत्तमदास टंडन

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

File No..../-11005/02/2021-22/

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.का.अ./एस-11005/02/2021-22/ दिनांक: 21/12/2021

सेवा में,

उप-निदेशक (प्रशासन)
प्रधान निदेशक महालेखाकार लेखापरीक्षा (नौवहन)
महाराष्ट्र, मुंबई- 400051

विषय:- विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के संयुक्तांक (15वें एवं 16वें अंक) की प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के संयुक्तांक (15वें एवं 16वें अंक) की प्राप्ति हुई, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र चयन अत्यन्त सार्थक, सुंदर एवं विषयानुकूल हैं।
पत्रिका से जुड़े सम्पादकीय परिवार सहित सभी संबद्ध अधिकारियों व कर्मचारियों, रचनाकारों तथा सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं नए वर्ष की अग्रिम शुभकामनाएं।

Arun Kumar Sharma
Sr.audit Officer
राजभाषा अनुभाग

महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टैलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2021-22/202
दिनांक: 22.12.2021

सेवा में

उप निदेशक (प्रशा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई ।

महोदय,

विषय : विभागीय गृह पत्रिका 'आँचल' के 15वें व 16वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 15.12.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय गृह पत्रिका 'आँचल' के 15वें व 16वें अंक की संयुक्तांक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती रितु मोटवानी का लेख 'कार्यक्षमता बनाम कार्य इच्छा शक्ति' एवं श्री अमित कुमार सिन्हा का लेख 'दुनियादारी बनाम शिक्षा' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

इसके अतिरिक्त श्री अभिनन्दन अग्रवाल की कविता 'किसान', श्री अंकित शर्मा की कविता 'सूरत भगवन की', श्रीमती बी. सरला की कविता 'जल ही जीवन है' एवं श्री जय राम सिंह की कविता 'आओ हिंदी को अपनाएं' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया
पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174

संख्या : हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/226
दिनांक : 22.12.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुम्बई

विषय : विभागीय हिन्दी अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "आँचल" के संयुक्तांक (15वें एवं 16वें अंक) की पावती।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "आँचल" के संयुक्तांक (15वें एवं 16वें अंक) की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठणीय एवं प्रेरणादायक है। एक अनुरोध है कि हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गये पावती को पत्रिका के अगले अंक के "**आपके पत्र वाले पृष्ठ**" में जरूर शामिल करें।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 24.12.2021

सेवा में,

उप निदेशक (प्रशा.)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(नौवहन), मुंबई -400051

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" का 15वां एवं 16वां संयुक्तांक ई-पत्रिका प्राप्त हुई । पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं । पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी । सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून

-345-

पत्रांक सं: हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/225
दिनांक:24.12.2021

सेवा में,

उपनिदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(नौवहन), मुंबई- 400051

विषय: विभागीय गृह-पत्रिका "आँचल" की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल" 2021** की प्राप्ति हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनायें उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज- सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका मे समाहित रचनाएँ विशेष रूप से श्री नित्यानन्द पाठक के द्वारा रचित **"आधुनिक जीवन शैली और नैतिक मूल्य शृंखला"**, श्रीमति रितु मोटवानी द्वारा रचित लेख **"कार्यक्षमता बनाम कार्य इच्छाशक्ति"**, श्री अमित कुमार सिन्हा द्वारा रचित लेख **"कनफर्म टिकट"** एवं **श्री एस. सुरेश** द्वारा रचित **"लक्ष्य की प्यास"** काफी महत्वपूर्ण हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
24/12
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

-347-

Gmail

Fwd: हिंदी पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्तांक की पावती प्रेषण ।

PDA Shipping Mumbai <pdashippingmum@cag.gov.in> Mon, Dec
To: Administration Section <adminmab1@gmail.com>

From: "... Singh" <hindicell.kar.ae@cag.gov.in>
To: "PDA Shipping Mumbai" <pdashippingmum@cag.gov.in>
Sent: Monday, December 27, 2021 4:48:18 PM
Subject: हिंदी पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्तांक की पावती प्रेषण ।

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.हि.क./रा.प्र./2021-22/156 दिनांक:24.12.2021

सेवा में,
उप निदेशक(प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई - 400051

विषय: हिंदी पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्तांक की पावती प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित गृह हिंदी पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्तांक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की साज-सज्जा सराहनीय है । श्री अभिनंदन अग्रवाल की कविता "जिंदगी", श्री अमित कुमार सिन्हा का लेख "दुनियादारी बनाम शिक्षा", एवं श्रीमती रूपराशि की रूपांतरित कविता "नज़र" प्रशंसनीय है । पत्रिका में सम्मिलित अन्य रचनाएं भी पठनीय व सराहनीय है ।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी ।

सधन्यवाद !

भवदीया,
ह/-
(शिवप्रिया बी.)
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष

-349-

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/219
दिनांक: 21.12.2021

सेवा में,

उप निदेशक (प्रशा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
(नौवहन), मुंबई-400 051

विषय: विभागीय गृह-पत्रिका 'आंचल' की प्रति का प्रेषण।

महोदय,

दिनांक 16.12.2021 को ई-मेल द्वारा विभागीय गृह-पत्रिका 'आंचल' की 15 वां एवं 16 वां संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर हैं। 'आधुनिक जीवन शैली और नैतिक मूल्य शृंखला', 'कार्य क्षमता बनाम कार्य इच्छाशक्ति', 'दुनियादारी बनाम शिक्षा', 'जल ही जीवन है', तथा 'जय हो हिन्दुस्तान की' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं। सभी रचनाकारों को साधुवाद।

पत्रिका को सफल एवं उच्च कोटि बनाने हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi Cell\let_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

---

कार्यालय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. 126
दिनांक:22/12/2021

सेवा में,
उप निदेशक (प्रशा.)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(नौवहन) मुंबई -400051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्ताइक पर प्रतिक्रिया सबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका "आँचल" के 15वें एवं 16वें संयुक्ताइक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद !

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री जय राम सिंह , क. अनुवादक की रचना 'आओ हिन्दी को अपनाएं', श्री अभिनन्दन अग्रवाल , सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'किसान' तथा श्री अमित कुमार सिन्हा ,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'दुनियादारी बनाम शिक्षा' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपुर – 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स/Fax - 0712-2524130

'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : cag.gov.in/ag/nagpur/en
e-mail - agaumaharashtra2@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/134 | दिनांक- 27.12.2021

सेवा में,
प्रभारी अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
6ठी एवं 7वीं मंजिल, आर.टी.आई भवन,प्लाट-सी.-2,
जी. एन. ब्लाक,बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व),
मुंबई – 400051
ईमेल- pdashippingmum@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** के **15वें** और**16वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** का **15वाँ** और **16वाँ** अंक का संयुक्तांक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक, रोचक और एक से बढ़कर एक हैं। हमारे विचार से श्री **जिज्ञासु पंत**, लेखापरीक्षक द्वारा रचित लेख **'कहानी चटपटे चिकन की'** मनोरंजक है एवं श्री **अमित कुमार सिन्हा**, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित कहानी **'दुनियादारी बनाम शिक्षा'** हमें बहुत अच्छी सीख देती है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पी.डी.ए (नौवहन), प्रशासन
P.D.A. (Shipping) ADMIN
आवक संख्या 553
दिनांक/Date 3/1/2022

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2021-22/65
दिनांक: 27-12-2021

सेवा में ,
मा. उप निदेशक महोदय जी,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई-400051

<u>विषय: अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका "आँचल" के 15 वें व 16 वें संयुक्तांक अंक के प्रतिभाव के संबंध में।</u>

महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "आँचल" के 15 वें व 16 वें संयुक्तांक अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषय के अनुसार रचनाओं का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र है। पत्रिका में श्री नित्यानन्द पाठक की रचना "आधुनिक जीवन शैली और नैतिक मूल्य श्रंखला", श्रीमती रितु मोटवानी की रचना "कार्यक्षमता बनाम इच्छा शक्ति", श्री अमित कुमार सिन्हा का लेख "कन्फर्म टिकट", और श्री अभिनंदन अग्रवाल की कविता "जिंदगी", श्रीमती रूपराशि जी की कविता "नजर" विशेष रूप ध्यान आकर्षित करती है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्राकृतिक छटा का दृश्य बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका के आवरण को आकर्षक बनाती है। संपूर्ण पत्रिका रंगीन होने के कारण पत्रिका का कलेवर एवं साज-सज्जा बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है। कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में और भी वृद्धि करती हैं। पत्रिका का अंतिम पृष्ठ कार्यालयी कार्मिकों हेतु प्रेरणादायी है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

पी.डी.ए (नौवहन), प्रशासन
P.D.A. (Shipping) ADMIN
आवक 491
दिनांक 3/1/2022

भवदीय,

(एस.जे. पारेख)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/66 | दिनांक:- 28 / 12 /2021

सेवा में, | 29 DEC 2021

उप निदेशक / प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(नौवहन) मुंबई, - 400051

<u>विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16वें अंक के प्रेषण के संबंध में।</u>

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं- कहानी चटपटे चिकन की, दुनियादारी बनाम शिक्षा, कन्फर्म टिकट, किसान आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

पी.डी.ए (नौवहन), प्रशासन
P.D.A. (Shipping) ADMIN
आवक संख्या 502
दिनांक/Date 5/1/2022

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा , मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा, मुंबई -400 051
C-25, Audit Bhavan, 8th Floor, Bandra Kurla Complex Bandra, Mumbai 400051
फैक्स -022 26573814 टेलीफोन नं .022 26573813 ईमेल pdcamumbai@cag.gov.in

सं.पीडीसीए/प्रशा./हिंदी पत्रिका/ | दि. 29/12/2021

सेवा में,
संपर्क अधिकारी(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई

विषय- हिंदी पत्रिका 'आंचल' के 15वें तथा 16वें संयुक्त अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आंचल' के 15वें तथा 16वें संयुक्त अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती हैं। पत्रिका राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियम से संबंधित जानकारी से अवगत कराती है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.

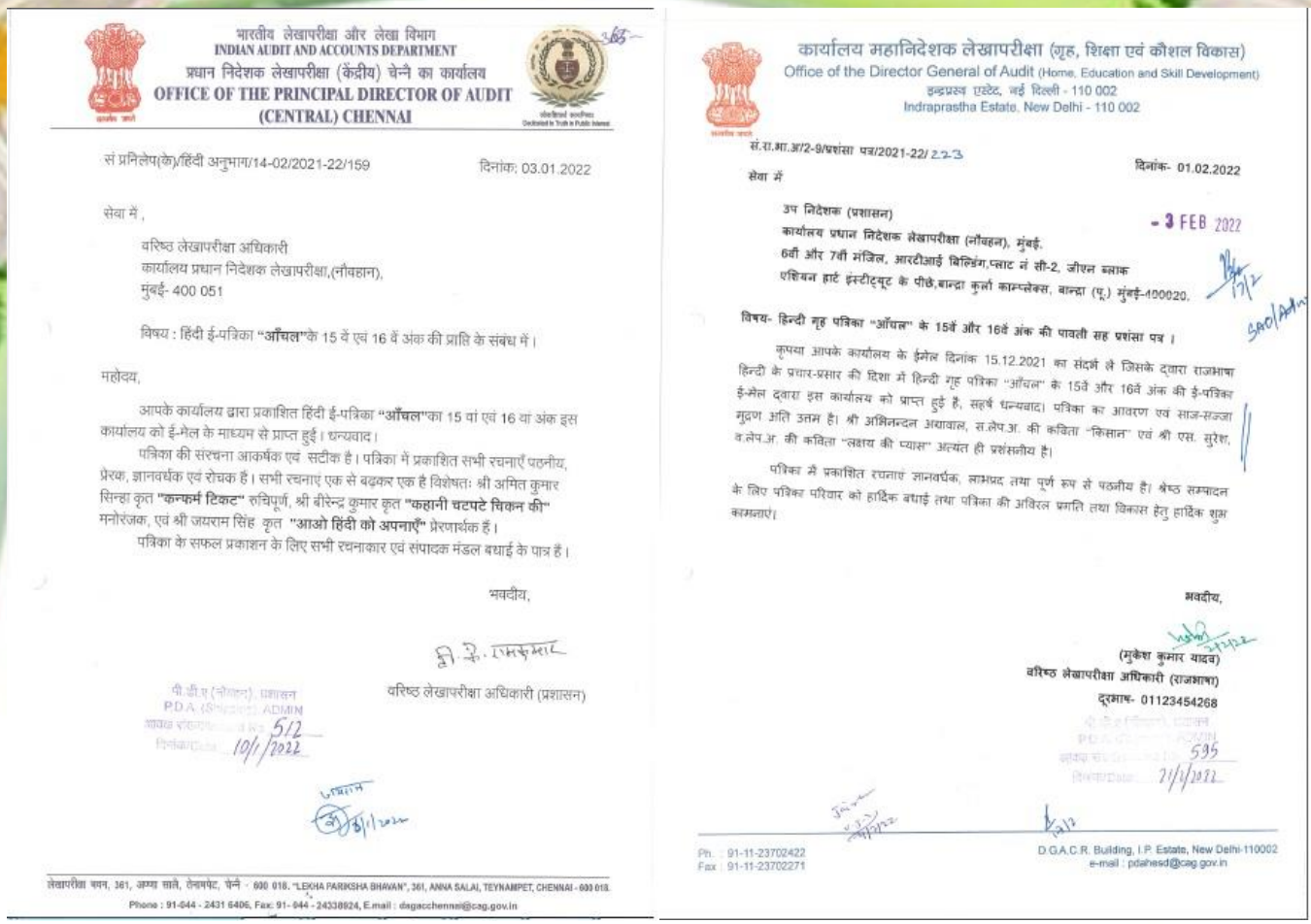

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

सं प्रनिलेप(के)/हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/159 दिनांक: 03.01.2022

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,(नौवहान),
मुंबई- 400 051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **"आँचल"**के 15 वें एवं 16 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"आँचल"**का 15 वां एवं 16 वां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्री अमित कुमार सिन्हा कृत **"कन्फर्म टिकट"** रुचिपूर्ण, श्री बीरेन्द्र कुमार कृत **"कहानी चटपटे चिकन की"** मनोरंजक, एवं श्री जयराम सिंह कृत **"आओ हिंदी को अपनाएँ"** प्रेरणार्थक हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dagacchennai@cag.gov.in

---

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
Office of the Director General of Audit (Home, Education and Skill Development)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2021-22/ 223 दिनांक- 01.02.2022

सेवा में

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई,
6वीं और 7वीं मंजिल, आरटीआई बिल्डिंग,प्लाट नं सी-2, जीएन ब्लाक
एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट के पीछे,बान्द्रा कुर्ला काम्प्लेक्स, बान्द्रा (पू.) मुंबई-400020.

- 3 FEB 2022

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16वें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र।

कृपया आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 15.12.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री अभिनन्दन अग्रवाल, स.लेप.अ. की कविता "किसान" एवं श्री एस. सुरेश, व.लेप.अ. की कविता "लक्ष्य की प्यास" अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

भवदीय,

(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271
D.G.A.C.R. Building, I.P. Estate, New Delhi-110002
e-mail : pdahesd@cag.gov.in

12/17/21, 6:00 PM Email

Email **PDA Shipping Mumbai**

विभागीय गृह पत्रिका आंचल के 15वें और 16वें अंकों का संयुक्तांक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

From : Sanjeev Kumar Yadav <sanjeevkumary.man.au@cag.gov.in> Fri, Dec 17, 2021 04:32 PM
Subject : विभागीय गृह पत्रिका आंचल के 15वें और 16वें अंकों का संयुक्तांक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।
To : PDA Shipping Mumbai <pdashippingmum@cag.gov.in>

<u>कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा),झारखण्ड, रांची</u>

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/476 दिनांक-17.12.2021

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई - 400051

विषय- विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16 वें अंकों का संयुक्तांक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 15वें और 16वें अंकों का संयुक्तांक** की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
ह/-
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

https://email.gov.in/h/printmessage?id=42702&tz=Asia/Kolkata&xim=1 1/2

चित्र बोलते हैं

झलकियाँ

गणतंत्र दिवस 2022 के शुभ अवसर पर महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मुम्बई के साथ प्रधान निदेशक महोदय झंडोत्तोलन करते हुए।

गणतंत्र दिवस 2022 के शुभ अवसर पर उपस्थित कार्मिकों को प्रधान निदेशक महोदय द्वारा सम्बोधन

कार्यस्थलों पर यौन प्रताड़ना के खिलाफ जागरूकता पर प्रस्तुति (डॉ. रुचि सिन्हा)

महिला सशक्तीकरण पर प्रस्तुति (डॉ. रेशमा खान)

हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए हिंदी अधिकारी श्री प्रवीण झा

राजभाषा हिन्दी की प्रगति की समीक्षा
(जुलाई 2021 से दिसम्बर 2021)

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट कागजात: उक्त नियम के अंतर्गत इस वर्ष के दौरान कुल **234** कागजात जारी किये गए। इस कार्यालय में कार्यालय-आदेश, परिपत्र, सूचना, अनुस्मारक आदि सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी किये जाते हैं।

2. हिंदी में प्राप्त पत्रों की स्थिति (राजभाषा नियम - 5) - प्राप्त पत्रों का जवाब शत्-प्रतिशत हिंदी में देना अनिवार्य है। इस कार्यालय में हिंदी में प्राप्त पत्रों के जवाब केवल हिंदी में ही दिए जाते हैं। इस वर्ष में हिंदी में प्राप्त पत्रों की संख्या **626** रही। इनमें से **110** के जवाब हिंदी में दिए गए, 05 पत्रों के जवाब अँग्रेजी में दिए गए तथा शेष **511** पत्र फाइल किए गए।

3. अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की स्थिति: इस वर्ष में कार्यालय को "क" तथा "ख" क्षेत्र से अंग्रेजी में कुल **1048** पत्रों की प्राप्ति हुई। इनमें से **67** पत्रों के जवाब अंग्रेजी में तथा **249** पत्रों के जवाब हिंदी में दिया गया तथा शेष **732** पत्र फाइल किए गए।

4. कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** एवं **ख** क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साथ क्रमशः **90 प्रतिशत** एवं **90 प्रतिशत** पत्राचार हिंदी में करना तथा **ग** क्षेत्र के साथ **55 प्रतिशत** पत्राचार हिंदी में करना अनिवार्य है। इस कार्यालय द्वारा इस वर्ष में **क, ख एवं ग** क्षेत्रों को प्रेषित पत्रों का प्रतिशत **क्रमशः 99.36%, 95.60% एवं 100%** रहा।

5. हिंदी में लिखी गईं टिप्पणियों की स्थिति: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** क्षेत्र में **75 प्रतिशत, ख** क्षेत्र में **50 प्रतिशत** तथा **ग** क्षेत्र में **30 प्रतिशत** टिप्पणियाँ हिंदी में लिखा जाना अनिवार्य है। इस छमाही में कुल **4363** टिप्पणियाँ लिखी गईं, जिनमें से हिंदी में **3310** तथा शेष **1053** अँग्रेजी में थीं। इस कार्यालय की वर्तमान छमाही के हिंदी में टिप्पण लेखन का **प्रतिशत 75.86** रहा जो कि लक्ष्य से अधिक है।

6. अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका "आँचल" का प्रकाशन: श्री पी. वी. हरि कृष्णा, प्रधान निदेशक द्वारा कार्यालय की गृह-पत्रिका **"आँचल"** के सत्रहवें ऑनलाइन अंक का विमोचन **सितंबर 2022** में किया गया।

7. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन: इस कार्यालय द्वारा प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-II, मुंबई के साथ संयुक्त रूपेण हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन अनिवार्यतः किया जाता है। जुलाई से सितम्बर 2021 की तिमाही में **30.09.2021** को तथा अक्तूबर से दिसम्बर, 2021 की तिमाही में **20.12.2021** को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

8. पारंगत प्रशिक्षण का आयोजन: राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित हिंदी प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्यालयीन कार्यों एवं प्रशिक्षण में समन्वय स्थापित करने के लिए कार्मिकों के समय एवं ऊर्जा की बचत करने के उद्देश्य से यह कार्यालय प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण के लिए नामित करता है। वर्तमान में **जुलाई से नवंबर 2021** के सत्र में इस कार्यालय के **2** कार्मिकों पारंगत उत्तीर्ण

घोषित किए गए हैं। वर्तमान में कार्यालय के सात कार्मिक पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। भविष्य में भी अधिक से अधिक कार्मिकों को हिंदी प्रशिक्षणों में नामित करने का प्रयास किया जाएगा।

9. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मुंबई: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय) की दिनांक **29.10.2021** को ऑनलाइन आयोजित राजभाषा की छमाही बैठक में इस कार्यालय के कार्यालय प्रधान श्री सी.एम.साने, महानिदेशक, कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुम्बई और उप निदेशक (प्रशासन) महोदय ने सहभागिता की।

10. हिंदी प्रशिक्षण: इस कार्यालय के हिंदी प्रशिक्षण हेतु पात्र कार्मिकों में से **20** कार्मिकों को **पारंगत** प्रशिक्षण प्राप्त है जबकि **07** कार्मिक पारंगत प्रशिक्षणाधीन हैं तथा **27 कार्मिक हिंदी में प्रवीणता प्राप्त** हैं जिन्हें प्रति वर्ष कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर से हिंदी में कार्य करने हेतु **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4)** के अंतर्गत आदेश दिया जाता है। इस कार्यालय के शेष अन्य सभी कार्मिकों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त है।

प्रस्तुतकर्त्ता: हिंदी प्रकोष्ठ

विविधा

(अवधि: जुलाई, 2021 से अब तक)

नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्रीमती दीक्षा गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	02.12.2021
2.	श्री अंकित आजाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13.12.2021
3.	श्री यतीन्द्र नागर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20.12.2021
4.	श्री अंकित कुमार	लेखापरीक्षक	31.12.2021
5.	सुश्री अनिता सिंह	निदेशक	06.04.2022
6.	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	उप निदेशक	06.09.2022

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्री दीपक यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	01.07.2021
2.	श्री सन्दीप राठौड़	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	01.07.2021
3.	श्री रवीन्द्र कुमार कौशिक	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20.07.2021
4.	श्री जयन्त घिंडानी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2022
4.	श्री वी.एस.के. नम्बूदिरि	निदेशक (प्रशासन)	03.01.2022

स्थानान्तरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कहाँ
1.	मोहम्मद हवीब	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	त्रिवेन्द्रम
2.	श्री के सानन्द	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	त्रिवेन्द्रम
3.	श्री जीतू पी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	त्रिवेन्द्रम
4.	श्री जी.आर. राजेश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	मुम्बई
5.	श्री सी.के, शफी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	मुम्बई
6.	श्री प्रवीण कुमार एम.	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	मुम्बई

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
	श्री एस शिवकामेश्वरन	निदेशक (प्रतिवेदन)	31.03.2022
1.	श्री वी.एस.के. नम्बूदिरि	निदेशक (प्रशासन)	31.07.2022
2.	श्रीमती मीनल वी कुलकर्णी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	11.08.2022
3.	श्री एस वेंकटरमण	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2022
4.	श्री टी वर्गीज	वरिष्ठ निजी सचिव	31.03.2022

"आँचल" परिवार नव-नियुक्त कार्मिकों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है। सभी पदोन्नत हुए कार्मिकों को **"आँचल"** परिवार बधाई देता है एवं भविष्य में ऐसे कई पदोन्नतियों की कामना करता है। **"आँचल"** परिवार सभी स्थानान्तरित कार्मिकों को उनके नए कार्यक्षेत्र और कार्यालय के सफल सेवाकाल के लिए शुभकामनाएँ देता है। **"आँचल"** परिवार सभी सेवानिवृत्त कार्मिकों को उनके सेवानिवृत्त जीवन में अच्छे स्वास्थ्य एवं खुशहाली के लिए शुभकामनाएँ देता है।

आँचल